त्रैमासिक गृह पत्रिका

अंक-89 (अप्रैल-जून, 2018)

वाप्कोस दर्पण

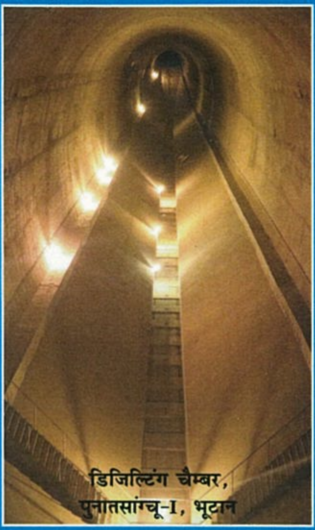
डिजिल्टिंग चैम्बर, पुनातसांग्चू-I, भूटान

नकाला रोड़ कॉरीडोर परियोजना में बिटुमिनस लेयर बिछाना, मोजाम्बिक

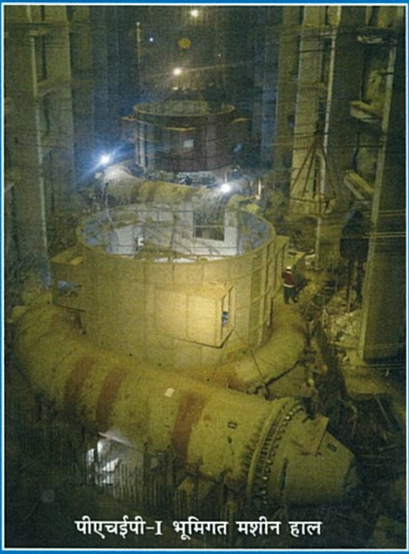
पीएचईपी-I भूमिगत मशीन हाल

आईटीबीपी की छठी बटालियन, छप्परा हेतु आवासीय व गैर आवासीय भवनों का निर्माण - प्रशासन ब्लॉक का 3डी दृश्य

बालावली दाह संस्कार घाट, उत्तराखंड-परियोजना के बाद का परिदृश्य

चंपासाक प्रांत में सिंचाई स्कीमें

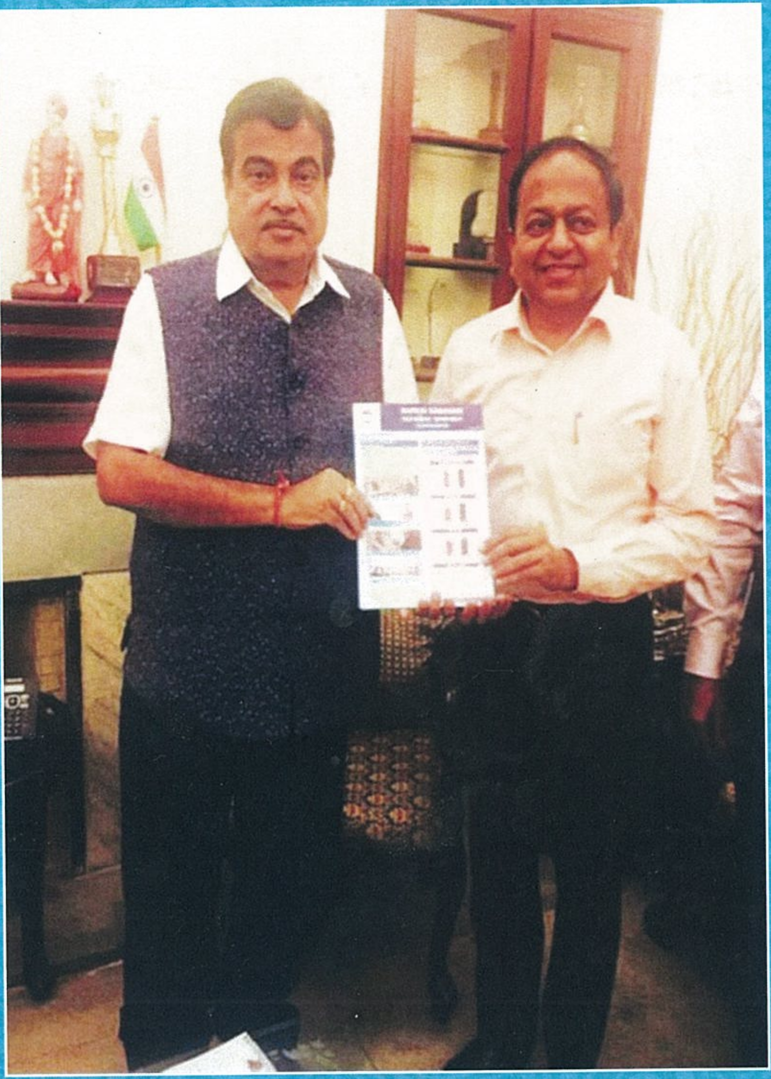

श्री नितिन गडकरी, माननीय मंत्री (सड़क परिवहन व महामार्ग, नौवहन और जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण), भारत सरकार द्वारा वाप्कोस न्यूज लैटर जारी किया गया।

श्री यू.पी. सिंह, सचिव, जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय, भारत सरकार और श्री आर. के. गुप्ता, अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक, वाप्कोस ने वर्ष 2018-2019 हेतु समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए।

वाप्कोस दर्पण

अप्रैल, 2018 से जून, 2018 अंक -89

संरक्षक
आर.के.गुप्ता
अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक

तकनीकी संपादन सलाहकार
अमिताभ त्रिपाठी, महा प्रबंधक

संपादन मण्डल
अनुपम मिश्रा
कार्यकारी निदेशक एवं अध्यक्ष, विराकास
डा.आर.पी.दूबे, वरि.महा प्रबंधक
अमिताभ त्रिपाठी, महा प्रबंधक

संपादक
निम्मी भट्ट,
प्रमुख (रा.भा.का.)

उप संपादक
डी.के.सेठी
उप प्रबंधक (रा.भा.का.)

सहयोग
गीता शर्मा, सहायक प्रबंधक
शारदा रानी, वरि.सहायक

(पत्रिका के अंतर्गत प्रकाशित लेखों में व्यक्त किए गए विचार लेखकों के अपने हैं। संपादन मण्डल का इसके लिए सहमत होना अनिवार्य नहीं है।)

केवल आन्तरिक वितरण हेतु

इस अंक में	पृष्ठ सं0
अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक की ओर से	1
संबोधन	2
सम्पादकीय – प्रमुख (रा.भा.का.) एवं संपादक	3
राजभाषा गतिविधियां	4
पंचेश्वर बहुउद्देशीय परियोजना : नदी घाटी परियोजना निर्माण में मील का एक पत्थर	5-6
खूब पढ़ो, खूब बढ़ो	7-8
वर्तमान परिदृश्य में सार्वजनिक उपक्रमों की चुनौतियां	9-11
बुद्ध का पुन: गृह आगमन-। (यात्रा की तैयारी)	12-15
राजभाषा हिन्दी का विकास	16-17
बेटी की विदाई	18-19
राजगीर भ्रमण-एक अनुभव	20-25
भारत में पाश्चात्य संस्कृति	26-28
मदर्स डे और भारत	29
पहेली जिन्दगी की	30-31
50वें स्थापना दिवस समारोह के अवसर पर पूर्व-कार्यक्रमों की श्रृंखला के अंतर्गत विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन	32-42
मुख्य समारोह : प्रात:कालीन सत्र "Transcending Boundaries-Touching Lives"	43-46
मुख्य समारोह : सायंकालीन सत्र "Transcending Boundaries-Touching Lives"	47-49
वाप्कोस के 50वें स्थापना दिवस के अवसर पर विभिन्न फील्ड कार्यालयों में मनाए गए कार्यक्रमों की झलकियां	50-53
वाप्कोस के 50वें स्थापना दिवस के अवसर पर विदेशों में स्थित वाप्कोस कार्यालयों में मनाए गए कार्यक्रमों की झलकियां	54-55
अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस	56
पुस्तकालय से	57
आपके पत्र	58

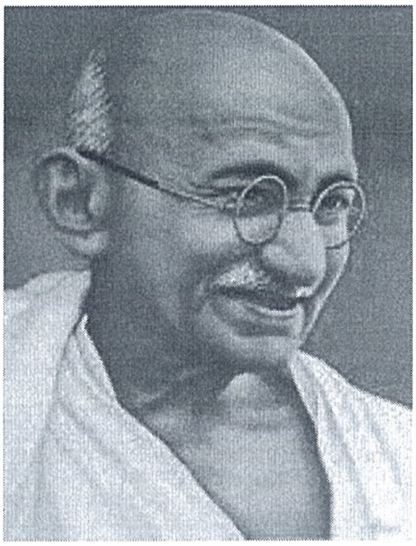

सत्याग्रही दुराचार को सदाचार से, दुष्टता को प्रेम से, क्रोध को अक्रोध से, असत्य को सत्य से, हिंसा को अहिंसा से दूर करना चाहते हैं । और कोई तरीका, इस दुनिया में पापों को दूर करने का नहीं है। इसलिए जो मनुष्य सत्याग्रही होने का दावा करता है, उसे आत्मनिरीक्षण करके देख लेना चाहिए कि क्या वह क्रोध, द्वेष आदि से मुक्त है ? वह जिन विकारों का विरोध करता है, स्वयं उन विकारों से मुक्त तो है न ?

- महात्मा गांधी

अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक की कलम से

हिन्दी एक सहज और सरल भाषा है। यह हमारी भावनाओं को सहज रूप में अभिव्यक्त करने का सशक्त माध्यम है। भाषा ही अपने संप्रेषण की भूमिका से कर्तव्य को, वर्ग को अथवा किसी भी समूह को एक पहचान देती है। हमारे राष्ट्र की पहचान और हमारी ताकत है हिन्दी। पिछले कुछ समय से केन्द्र सरकार के स्तर पर कार्यालय के कार्यों में राजभाषा के प्रयोग के प्रयासों की दिशा में काफी तेजी आई है और अपेक्षाओं में पर्याप्त वृद्धि हुई है।

आर्थिक और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में दिन प्रतिदिन प्रतिस्पर्धा तेज होती जा रही है और इसमें आगे बढ़ने के लिए हमें अपने संसाधनों का उच्चतम व सर्वोत्तम उपयोग करना होगा। तकनीकी क्षेत्र में निरंतर हो रहे परिवर्तनों के माध्यम से कार्य करते हुए अपनी स्थिति मजबूत बनानी होगी। कम्पनी की उन्नति के लिए नए ज्ञान को सृजित कर कम्पनी का विकास करना होगा। अपना लक्ष्य निर्धारित करना होगा और यह सब हम सबके मिले-जुले प्रयासों से ही संभव हो पाएगा।

यह पत्रिका आप सबके ज्ञान व अनुभवों को समेटकर नियमित रूप से प्रकाशित की जा रही है। पत्रिका के 89वें अंक के सफल प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

आर. के. गुप्ता

(आर.के.गुप्ता)

अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक

राजभाषा गतिविधियां

- जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय की हिन्दी सलाहकार समिति की दिनांक 08.06.2018 को श्रीनगर में माननीय जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण राज्य मंत्री श्री अर्जुन राम मेघवाल जी की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में वाप्कोस से श्री अनुपम मिश्रा, कार्यकारी निदेशक (परि.व मा.सं.वि.) एवं अध्यक्ष, विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति, श्रीमती निम्मी भट्ट, प्रमुख (रा.भा.का.) एवं श्री डी.के.सेठी, उप प्रबन्धक (रा.भा.) ने भाग लिया।
- दिनांक 28.06.2018 को वाप्कोस में हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय की श्रीमती वीना सत्यवादी, सहायक निदेशक (रा.भा.) भी उपस्थित थी जिन्होंने राजभाषा कार्यान्वयन के रूप में हिंदी की संवैधानिक स्थिति तथा राजभाषा नियम/अधिनियम के बारे में जानकारी दी।
- दिनांक 27.06.2018 को श्री अनुपम मिश्रा, कार्यकारी निदेशक (परि.व मा.सं.वि.) एवं अध्यक्ष, विराकास की अध्यक्षता में विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित की गई।
- जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय की दिनांक 26.06.2018 को श्री बी.बी.शर्मा, आर्थिक सलाहकार एवं राजभाषा प्रभारी की अध्यक्षता में आयोजित राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में वाप्कोस से श्री डी.के.सेठी, उप प्रबन्धक (रा.भा.) ने भाग लिया।
- राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग संबंधी स्थिति का जायजा लेने हेतु श्रीमती निम्मी भट्ट, प्रमुख (रा.भा.का.) तथा श्री डी.के.सेठी, उप प्रबन्धक (रा.भा.) द्वारा दिनांक 17.05.2018 को वाप्कोस के गुड़गांव स्थित पत्तन एवं बन्दरगाह प्रभाग का राजभाषाई निरीक्षण किया गया।
- राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग संबंधी स्थिति का जायजा लेने हेतु श्रीमती निम्मी भट्ट, प्रमुख (रा.भा.का.) द्वारा दिनांक 21.06.2018 को वाप्कोस के गुड़गांव स्थित पर्यावरण, गंगा संरक्षण एवं निर्माण प्रबन्धन प्रभाग का राजभाषाई निरीक्षण किया गया।

डी.के.सेठी
उप प्रबंधक (रा.भा.का.)

पंचेश्वर बहुउद्देशीय परियोजना : नदी घाटी परियोजना निर्माण में मील का एक पत्थर

अमित मिश्रा, अभियंता प्रशिक्षु
एवं अमित ग्वांडे, उप मुख्य अभियंता
बांध एवं जलाशय प्रभाग

पंचेश्वर बहुउद्देशीय परियोजना भारत एवं नेपाल सरकार की संयुक्त द्विराष्ट्रीय परियोजना है। इस महत्वपूर्ण परियोजना की परिकल्पना महाकाली नदी (शारदा नदी) पर की गई है, जहां नेपाल एवं भारत की अंतर्राष्ट्रीय सीमाएं मिलती हैं। परियोजना क्षेत्र भारत में उत्तराखण्ड राज्य के चम्पावत, पिथौरागढ़ और अल्मोड़ा जिलों तथा नेपाल में बटादी और धारचुला जिलों में स्थित है।

पंचेश्वर बहुउद्देशीय परियोजना के अंतर्गत महाकाली और सरयू नदियों के संगम से 2.5 किलोमीटर नीचे एवं टनकपुर शहर (भारत) से 70 किलोमीटर ऊपर की ओर 300 मीटर ऊंचे एक विशालकाय शैलभरित (रॉकफिल) मुख्य बांध की परिकल्पना की गयी है। भारत और नेपाल की प्रत्येक भूमि पर कुल दो भूमिगत बिजलीघर की उत्पादन क्षमता 2400 मेगावाट होगी। नीचे के भू-भाग की सिंचाई जल की आवश्यकता पूर्ण करने हेतु पंचेश्वर बिजलीघरों से जारी किए गए प्रवाह को दूर करने के लिए मुख्य बांध से नीचे एक पुन: विनियमन (री-रेग्यूलेटिंग) कंक्रीट गुरुत्वाकर्षण बांध प्रस्तावित है जोकि पंचेश्वर मुख्य बांध से 27 किलोमीटर नीचे तथा 95 मीटर ऊंचा है। पुन: विनियमन बांध पर कुल 240 मेगावाट स्थापित क्षमता के दो भूमिगत बिजलीघरों की परिकल्पना की गई है।

विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (डीपीआर) वाप्कोस द्वारा तैयार की गई थी और पंचेश्वर विकास प्राधिकरण (पीडीए) को सौंपी गई थी जोकि भारत एवं नेपाल सरकार के विशेषज्ञ समितियों के पास मूल्यांकन हेतु अध्ययन में है। पंचेश्वर मुख्य बांध 300 मीटर ऊंचाई तथा लगभग 02 किलोमीटर आधार चौड़ाई के साथ दुनिया में सबसे ऊंचे शैलभरित बांधों में से एक है। हिमालयी भू-गर्भ संरचना तथा भूकम्प का चतुर्थ श्रेणी क्षेत्र इस परियोजना को अत्यंत चुनौतीपूर्ण बना देता है जिसे वाप्कोस ने सफलतापूर्वक सम्पन्न किया है। पंचेश्वर परियोजना के तहत मुख्य बांध में सालाना 7678 जीडब्ल्यूएच तथा रूपाली गढ़ पुन:विनियमन बांध में सालाना 1438 जीडब्ल्यूएच ऊर्जा उत्पन्न होगी। परियोजना का

उद्देश्य भारत में 2.59 लाख हेक्टेयर भूमि और नेपाल में 1.70 लाख हेक्टेयर भूमि की अतिरिक्त सिंचाई प्रदान करके दोनों देशों में अनाज उत्पादन में वृद्धि कर सुख-समृद्धि लाना है। पंचेश्वर परियोजना का पर्यावरण प्रभाव आकलन (ईआईए) का विवरण 116 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र जलमग्न होने के कारण अत्यंत महत्वपूर्ण था जिसे पूर्ण किया है। सभी सार्वजनिक सुनवाईयों को भी वाप्कोस ने सफलतापूर्वक क्रियान्वित किया।

पंचेश्वर बहुउद्देशीय परियोजना, भारत-नेपाल

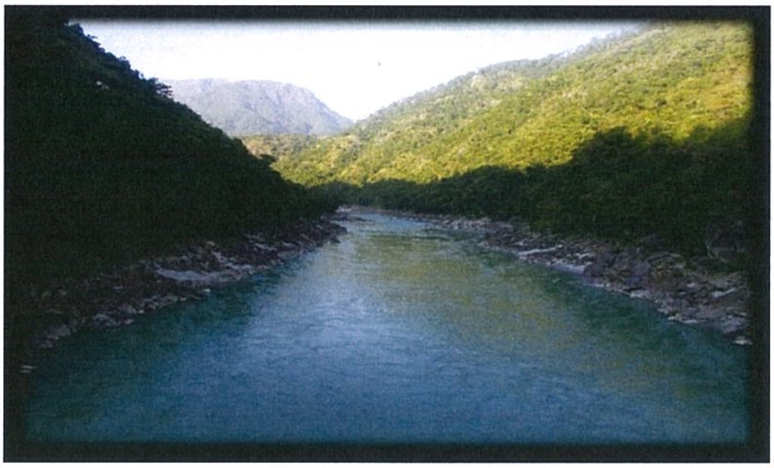

पंचेश्वर परियोजना सामान्य जनमानस की बिजली, सिंचाई संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करके दोनों देशों के बीच सुख, समृद्धि एवं मित्रता का एक नया अध्याय जोड़ेगी।

******

खूब पढ़ो, खूब बढ़ो

डा0 उदय रोमन
क्षेत्रीय प्रबंधक, भोपाल कार्यालय

ये कदमों की आहट आ रही कहां से,
पोषाकों में ये टुकडियां चल पड़ी कहां से,
मंदिरों सा शंखनाद हो रहा किधर से,
ये घंटियों सी भ्रमर ध्वनि बज रही कहां से,

निकल पड़े हम बस्ते लेकर रस्ते नये बनाने को।
विद्या की चौखट पर जाकर ज्ञान का दीप जलाने को।
नये दौर में नई दिशा की सबको राह दिखाने को।
शिक्षा की इस नई रीत को सबको आज बताने को।

खूब पढ़ो, खूब बढ़ो, खूब पढ़ो, आगे बढ़ो
खूब पढ़ो, खूब बढ़ो, खूब पढ़ो, आगे बढ़ो।

सदाचार जब पढ़ो अगर तो आचारों का ध्यान रखो।
मां पिता की सेवा करके उनका तुम सम्मान करो।
जो सीखा है उसे सिखाकर शिक्षा पर अभिमान करो।
पढ़ना लिखना बहुत जरूरी घर घर में एलान करो।

खूब पढ़ो, खूब बढ़ो, खूब पढ़ो, आगे बढ़ो
खूब पढ़ो, खूब बढ़ो, खूब पढ़ो, आगे बढ़ो।

गुणा भाग करते करते तुम इस त्रिकोण को सुलझाओ।
हर बच्चे की वर्षगांठ पर मिलकर तुम सब वृक्ष लगाओ।
जल संरक्षण बहुत जरूरी ये तुम सबको समझाओ।
अपनी शाला स्वच्छ रखो और परिसर को तुम शुद्ध बनाओ।

खूब पढ़ो, खूब बढ़ो, खूब पढ़ो, आगे बढ़ो
खूब पढ़ो, खूब बढ़ो, खूब पढ़ो, आगे बढ़ो।

अमल क्षार से करो परीक्षण, त्वरण भार से बल निकालो।
दी जो शिक्षा हमने तुमको, तुम नभ को छूकर रंग डालो।
हर घर में अब बिजली पहुंचे, हर कोना रोशन कर डालो।
हर लड़की अब शिक्षा पाये, इस देश को उन्नत कर डालो।

खूब पढ़ो, खूब बढ़ो, खूब पढ़ो, आगे बढ़ो
खूब पढ़ो, खूब बढ़ो, खूब पढ़ो, आगे बढ़ो।

चल पड़े ये नन्हें कदम जहां
बस जिंदगी शुरू हो गई वहां
कौन कहता है कि अशिक्षित हैं हम
ज्ञान की कोपल हर पल फूटती है यहां

खूब पढ़ो, खूब बढ़ो, खूब पढ़ो, आगे बढ़ो
खूब पढ़ो, खूब बढ़ो, खूब पढ़ो, आगे बढ़ो।

******

कुछ इस तरह श्रीकृष्ण ने तोड़ा अर्जुन का घमंड

एक बार अर्जुन को अहंकार हो गया कि वही भगवान का सबसे बड़ा भक्त है। उनकी इस भावना को श्रीकृष्ण ने समझ लिया। एक दिन वह अर्जुन को अपने साथ घुमाने ले गए। रास्ते में उनकी मुलाकात एक गरीब ब्राहम्ण से हुई। उसका व्यवहार थोड़ा विचित्र था, वह सूखी घास खा रहा था और उसकी कमर से तलवार लटक रही थी। अर्जुन ने उससे पूछा, ''आप तो अहिंसा के पुजारी है। जीव हिंसा के भय से सूखी घास खाकर अपना गुजारा करते हैं लेकिन फिर हिंसा का यह उपकरण तलवार क्यों आपके साथ है?'' ब्राहम्ण ने जवाब दिया, ''मैं कुछ लोगों को दंडित करना चाहता हूं।''

अर्जुन ने पूछा, ''आपके शत्रु कौन है?'' ब्राहम्ण ने कहा ''मैं चार लोगों को खोज रहा हूं ताकि उनसे अपना हिसाब चुकता कर सकूं। सबसे पहले तो मुझे नारद की तलाश है। नारद मेरे प्रभु को आराम नहीं करने देते, भजन-कीर्तन कर उन्हें जगाए रखते हैं। फिर मैं द्रौपदी पर भी क्रोधित हूं। उसने मेरे प्रभु को ठीक उसी समय पुकारा जब वह भोजन करने बैठे थे। पांडवों को दुर्वासा ऋषि के श्राप से बचाने हेतु उन्हें तुरंत जाना पड़ा। उसने मेरे भगवान को झूठा खाना खिलाया।''

ब्राहम्ण ने कहा कि मेरा तीसरा शत्रु है ह्रदयहीन प्रहलाद। उसने मेरे प्रभु को गर्म तेल के कड़ाहे में प्रविष्ट करवाया, हाथी के पैरों तले कुचलवाया और अंत में खम्भे से प्रकट होने के लिए विवश किया और चौथा शत्रु है अर्जुन। उसकी दुष्टता देखिए, उसने मेरे प्रभु को अपना सारथी बना डाला। उसे भगवान की असुविधा का तनिक भी ध्यान नहीं रहा। कितना कष्ट हुआ होगा मेरे प्रभु को। यह कहते ही ब्राहम्ण की आंखों में आंसू आ गए। यह देख अर्जुन का घमंड चूर-चूर हो गया। उसने श्रीकृष्ण से क्षमा मांगते हुए कहा, ''मान गया प्रभु, इस संसार में न जाने आपके कितने तरह के भक्त हैं, मैं तो कुछ भी नहीं हूं।''

****

वर्तमान परिदृश्य में सार्वजनिक उपक्रमों की चुनौतियां

निम्मी भट्ट
प्रमुख (रा.भा.का.)

सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम भारत सरकार की ऐसी धरोहर हैं जो देश के बहुआयामी विकास में कई दशकों से निर्णायक भूमिका निभा रहे हैं। खुले बाजार की नीति और बढ़ती हुई जनसंख्या ने सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों के लिए हर क्षेत्र में संभावनाएं बढ़ा दी हैं।

देश के विकास में सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों की भागीदारी बहुत महत्वपूर्ण है। भारत के औद्योगिक विकास में सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों ने विशेष भूमिका निभाई है। प्रतिस्पर्धा के इस दौर में उनका विकास और परिपक्वता इस बात का प्रमाण है। विश्व में निजी कम्पनियों को जहां अति उत्पादक बताया गया वहीं सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों ने अपनी प्रतिस्पर्धात्मक गुणवत्ता से यह सिद्ध कर दिया है कि वे बदलते हुए परिवेश में भी मजबूती के साथ खड़े रह सकते हैं। परन्तु वैश्वीकरण एवं खुले बाजार की इस नीति ने सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों के लिए नई चुनौतियों को भी जन्म दिया है। आज हर उपक्रम के सामने निम्नलिखित चुनौतियां हैं:-

1. भविष्य के लिए सुरक्षित रणनीति बनाना।
2. नई सूचना और तकनीक का अधिकतम उपयोग करना।
3. भविष्य के लिए मानव संसाधन का विकास।
4. उत्पादकता बढ़ाना।
5. संगठनात्मक ढ़ांचे में समयानुकूल बदलाव।
6. बाजार में हिस्सेदारी बढ़ाना।

1. भविष्य के लिए सुरक्षित रणनीति बनाना :- प्रत्येक उपक्रम भविष्य की रणनीतियां बनाकर ही आगे बढ़ता है ताकि भविष्य में उसे सुरक्षित व्यवसायिक वातावरण एवं प्रतिद्वन्दियों से एक अलग पहचान मिल सके। आज के परिदृश्य में यह जरूरी है कि हर उपक्रम बड़ी सावधानी से वर्तमान एवं भविष्य की ऐसी नीतियां बनाए जिससे उनकी पहुंच अंतर्राष्ट्रीय बाजारों तक हो सके।

2. नई सूचना और तकनीक का अधिकतम उपयोग करना :- अपनी प्रतिस्पर्धा बनाए रखने के लिए उपक्रमों के लिए यह अत्यंत जरूरी है कि अधिक से अधिक सूचनाओं एवं तकनीक का प्रयोग करे। यह तो सब जानते हैं कि भविष्य उसी का है जो दूसरों से आगे सोचेगा और नई तकनीके अपनाएगा। इसीलिए ऐसी योजनाएं और नीतियां विकसित करनी होंगी जो जल्द और आसानी से अमल में लाई जा सकें।

3. भविष्य के लिए मानव संसाधन का विकास:- किसी भी उपक्रम की सफलता या विफलता उसके विकसित मानव संसाधन पर निर्भर करती है। भविष्य की चुनौतियों का सामना करने के लिए मानव संसाधनों को नियमित एवं सार्थक रूप से विकसित होना चाहिए। अब सरकारी आवरण उतारकर प्रतिस्पर्धात्मक दृष्टिकोण अपनाकर नए-नए प्रशिक्षण कार्यक्रमों को क्रियान्वित करना होगा। हम यदि उचित नेतृत्वशील मानव संसाधन बनाने में असमर्थ होंगे तो संभवतः क्रियाशील प्रतिक्रियाओं और उपक्रमों का आसानी से अपने आप ही उदय होगा। अतः हमें अपने मानव संसाधनों को अति उत्तम तरीके से विकसित व क्रियान्वित करना होगा।

4. उत्पादकता बढ़ाना :- विनिवेश नीति के तहत सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में लगाई गई धनराशि को विनिवेश के माध्यम से पुनः अर्जित करके अन्य क्षेत्रों में लगाना एक सराहनीय कदम है। वर्तमान परिदृश्य में हर उपक्रम अपनी लागत को कम करके अपनी उत्पादक क्षमता बढ़ा सकता है। सरकार द्वारा इस क्षेत्र में दिया जा रहा सहयोग सराहनीय है। आज हर उपक्रम उन क्षेत्रों को टटोल रहा है जिनका दोहन कर सीमित संसाधनों में ही अपनी उत्पादन क्षमता को बढ़ा सके या उसी उत्पाद क्षमता को अधिक गुणवत्ता प्रदान कर सके। इसके लिए उपक्रमों को लागत कटौती योजनाओं का विकास करना होगा या लग रही लागत की सार्थकता को सिद्ध करना होगा ।

5. संस्थागत ढ़ांचे में समय के साथ बदलाव :- सरकार के सम्मुख उपक्रमों की घटती लाभवृद्धि एक ऐसी चुनौती थी जिसका मुख्य कारण संस्थागत ढांचा था। अतः इसमें समय के साथ बदलाव जरूरी था ताकि उपक्रमों के ढांचे में बदलाव करके इन्हें और अधिक विकासशील और उपभोक्ताओं के अनुरूप बनाया जा सके। संस्थागत ढ़ांचे में बदलाव के अंतर्गत विभागों का विलय या विसर्जन कर उनकी उपयोगिता को बढ़ाया जा सकता है।

6. इन सब चुनौतियों को उपक्रमों ने सही रूप में पहचाना और पहचान रही है। वर्तमान समय में जो उपक्रम मानव संसाधन विकास एवं बदले हुए आर्थिक जगत पर पैनी

नजर रखकर अपने लिए नए बाजार तलाश रहे हैं, वो भविष्य में एक सुदृढ़ और मजबूत उपक्रमों के रूप में उभर सकते हैं।

7. बाजार में अपनी हिस्सेदारी बढ़ाना :- किसी भी व्यवसाय के लिए सार्वजनिक या निजी क्षेत्र के उपक्रमों को यह जानना जरूरी है कि बाजार का कुल कितने प्रतिशत हिस्सा उनके पास है क्योंकि किसी भी व्यवसाय में हर उपक्रम अपनी ज्यादा से ज्यादा हिस्सेदारी बनाने के लिए प्रयत्नशील रहता है। किसी भी व्यवसाय में अपनी हिस्सेदारी बढ़ाने के लिए सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों को परम्परागत तरीके से किए जा रहे व्यवसाय को पुन: नए दृष्टिकोण से देखना होगा। उन्हें उन बाजारों को टटोलना होगा जो अभी तक अविकसित हैं या जो अभी-अभी विकास की प्रक्रिया में शामिल हुए हैं। इसके लिए उपक्रमों को ऐसी टीम बनानी होगी जो पूरी तरह बाजार पर केन्द्रित होकर उसके उतार चढ़ाव को भली भांति समझ सके। इन टीमों को बाजार भेदने और बाजार फैलाव की रणनीतियों का सहारा भी लेना होगा ताकि बाजार में मजबूती से खड़े रह कर अपनी हिस्सेदारी बढ़ा सकें।

आज इंटरनेट व बदलती आर्थिक नीतियों के माध्यम से आने वाली किसी भी चुनौती का सामना किया जा सकता है जिसके लिए जरूरी है कि वर्तमान व्यवसाय को सही रूप में आंक कर अपनी क्षमताओं के बल पर व्यवसाय की संभावनाओं को नऐ रूप में प्रस्तुत करना। इससे व्यवसाय की गुणवत्ता और विकास दोनों में वृद्धि होगी और बाजार में बने रहने के लिए मजबूती भी मिलेगी।

******

जो बड़ेन को लघु कहें, नहीं रहीम घटी जाहिं।
गिरधर मुरलीधर कहें, कछु दुःख मानत नाहिं।।

अर्थ : रहीम कहते हैं कि बड़े को छोटा कहने से बड़े का बड़प्पन नहीं घटता, क्योंकि गिरिधर (कृष्ण) को मुरलीधर कहने से उनकी महिमा में कमी नहीं होती।

बुद्ध का पुनः गृह आगमन-।
(यात्रा की तैयारी)

प्रवीन कुमार
वरि.म.प्र.

गृह त्याग कर छः वर्षों की घनघोर तपस्या के उपरांत कपिलवस्तु के राजकुमार सिद्धार्थ को समाधि अवस्था में मृत्युदेव (मृत्यु, रोग, सांसारिक आनंद, धन, कुसंस्कारों का कामदेवता) पर विजय प्राप्त कर ज्ञान प्राप्त हुआ तथा वे बुद्ध कहलाए। ब्रह्मा के आग्रह पर उन्होंने शील, समाधि, प्रत्यक्ष ज्ञान पर आधारित धर्म मार्ग को संसार में स्थापित किया तथा तपस्वियों (Monks) के लिए उनेक विहारों की स्थापना की जिनमें तपस्या कर अनेक व्यक्ति अपने कुसंस्कारों से मुक्त हो जीवनमुक्त दिव्यता को प्राप्त करने लगे।

जब तथागत (बुद्ध) राजगृह (बिहार में राजगिरि) के वेलुवन विहार में थे, उनके पिता महाराजा शुद्धोदन (जोकि पूर्व जन्म में दशरथ थे तथा गौतम बुद्ध थे राम) ने विचार किया ''मेरे पुत्र ने छः वर्षों की कड़ी तपस्या कर सर्वोच्च जीवनमुक्त बुद्ध अवस्था को प्राप्त कर लिया है तथा सदधर्म की स्थापना की है'' अपने एक मंत्री को अनेक व्यक्तियों के साथ राजगृह स्थित विहार में यह कह कर भेजा कि तुम्हारे पिता महाराज शुद्धोदन तुम्हें स्मरण कर रहे हैं तथा वे पुत्र को समझाकर कपिलवस्तु लाएं। 'जो आज्ञा महाराज' कह कर वे 60 योजन की यात्रा पर निकल पड़े तथा उस समय राजगृह विहार पहुंचे जब दसबल (बुद्ध) का धर्म प्रवचन हो रहा था। मंत्री ने विचार किया कि प्रवचन के पश्चात ही वह राजाज्ञा का पालन करेगा तथा वे सभी सभा के अंतिम छोर पर खड़े होकर प्रवचन सुनने लगे। सुनते-सुनते ही उनमें (विद्युत धारा अनुभव के समान) समाधि अवस्था जाग्रत हुई तथा सभी अरिहंत (जीवन मुक्त) अवस्था को प्राप्त हुए (पूर्वकाल में वे देवता थे तथा बुद्ध को ज्ञान प्राप्ति की आशा से उन्होंने बुद्ध के समीप ही जन्म लिया था) भगवान ने हाथ उठाकर कहा ''एथ भिक्खवो'' (आओ तपस्वियों) तथा उन सभी के शरीर पर ऋद्धि शक्ति से भगवे वस्त्र तथा दानपात्र क्षणमात्र में ही प्रकट हो गए। (उन्हें अपनी दिव्यता का ज्ञान हुआ तथा संसार को तुच्छ जानकर वहीं सन्यासी बन गए)। मंत्री ने भी इस प्रकार दिव्य मार्ग को प्राप्त कर संसार को भुला दिया (जैसे कि हीरे को प्राप्त कर कोई मिट्टी के पात्र को भुला देता है) इस प्रकार से महाराज ने 9 मंत्रियों को अनेक व्यक्तियों के दल के साथ भेजा तथा उनमें से कोई भी लौट कर नहीं आया।

कोई सूचना न पाकर महाराज ने विचार किया कि मैंने अनेक व्यक्तियों को खो दिया है अब किसे भेजूं। महाराज ने देखा कि एक कालउदायी नामक विश्वासपात्र मंत्री, जोकि बुद्ध का बालपन से ही साथी था तथा दोनों साथ-साथ ही खेल कर बड़े हुए थे।

महाराज ने कालउदायी से कहा ''प्रिय कालउदायी! पुत्र को देखने की इच्छा के कारण मैंने 9 मंत्रियों को अनेक व्यक्तियों के साथ भेजा, परन्तु एक भी लौट कर नहीं आया। क्या तुम मेरी इस इच्छा को मेरे प्राणों के समान जानकर पूर्ण करोगे?''।

कालउदायी ने उत्तर दिया ''महाराज यह कार्य मैं अवश्य करुंगा यदि आप मुझे सन्यास में दीक्षित होने की भी अनुमति दें''।

महाराज शुद्धोदन ''तुम सन्यास धारण करो या नहीं परन्तु तुम मेरे पुत्र का अवश्य दर्शन कराओ।''

इस प्रकार कालउदायी ने राजसंदेश लेकर अनेक व्यक्तियों के साथ राजगृह के लिए प्रस्थान किया तथा वे भी जब भगवान बुद्ध की धर्म सभा के अंतिम छोर पर खडे होकर प्रवचन सुनने लगे, उन्हें भी ध्यान समाधि का तुरंत अनुभव हुआ (जैसे प्रचंड अग्नि के समीप रखे रूई के फाहे जल उठते हैं, विद्युतीय अनुभव से उनके मानस के पूर्व संस्कारों की समाप्ति हुई) और वे वहीं सर्वोच्च अरिहंत अवस्था को प्राप्त हुए। प्रवचन के अंत में भगवान बुद्ध ने जैसे ही कहा ''आओ तपस्वियो'', उन्हें भी ऋद्धि शक्ति द्वारा भगवे वस्त्रों की उपलब्धि हुई तथा वे भी संघ के ही हो गए।

भगवान बुद्ध को ग्रीष्म ऋतु में ज्ञान की प्राप्ति हुई थी, वर्षा बीती, हेम ऋतु बीती। कालउदायी को आये हुए 7-8 दिन ही हुए थे, फाल्गुन मास की पूर्णमासी को कालउदायी ने विचार किया कि अब बसंत ऋतु है, मार्ग बाधारहित हैं, चारों ओर हरी भरी घास है, वन में पुष्पों की भरमार है। यह समय है कि दसबल (बुद्ध) अपने परिवार से मिलने जाएं। अतः उन्होंने भगवान बुद्ध से गाथा कही :-

''अंगारिनों दानि दुमा भदन्ते, फलेसिनो छदनं विप्पहाय।
ते अच्चिमन्तोव पभासयन्ति, समयो महावीर भागीरसानं।।''...

अंगार के रंग के समान वृक्ष दृष्टिगोचर हो रहे हैं, भगवन, फल की आशा से वे पत्ते गिरा रहे हैं।
अग्नि के रंग के समान वे प्रभासित हैं, समय है महावीर (बुद्ध) सही यही।।''
हरियाली और पुष्पों से लदे वृक्ष, चारों ओर मनोरम दृश्य है, सभी दिशाएं सुगंध से भरपूर हैं।
हर ओर पुष्प हैं तथा वृक्षों से पुष्प पत्र गिरते दृष्टिगोचर हो रहे हैं

यही समय है वीर, प्रस्थान के लिए उपयुक्त।।
न तो ठंडा है, न है गर्म परन्तु यह है सुखद ऋतु भगवन।
आप फिर से शाक्यों तथा कोलियों(पत्नी के कुल) को फिर से देखें रोहिनी नदी के पार।।
आशा से खेतों को जोता जाता है, आशा से बीज बोया जाता है।
धन की आशा से समुद्र पार कर व्यापारी जाते हैं, मैं भी आशा से यह कहता हूं।।
पुन: पुन: बीज बोया जाता है, पुन: पुन: देवराज (इन्द्र) वर्षा करते हैं।
पुन: पुन: कृषक खेत जोतते हैं आशा से, पुन: पुन: अन्न धन की प्राप्ति होती है।।
पुन: पुन: याचक याचिका करते हैं, पुन: पुन: दानपति दान करते हैं।
पुन: पुन: जब दानी दान करते हैं, पुन: पुन: वे स्वर्ग में अपना स्थान निश्चित करते हैं।।
(आप जैसे) वीर से सात युगों के परिवारजन भी शुभगति पाते हैं, वे जिस कुल में भी जन्म लेते हैं।
ऐसा मेरा तथा देवराज (इन्द्र) का मानना है कि आप ही वे सच्चे मुनिवर जन्में हैं।।
शुद्धोदन है उनके पिता का नाम, बुद्ध की माता माया।
जिन्होंने बोधिसत्व को कोख से जन्म दिया,
परन्तु अब वे शरीर त्याग तुषिता स्वर्ग में मोद में हैं।।
वे गौतमी काल को प्राप्त हो, मृत्यु लोक को त्याग कर
अब आनंद पूर्वक स्वर्ग में देवगणों से सेवित हैं।।

भगवान बुद्ध ने कालउदायी से पूछा कि किस कारण से वह इस मधुर वाणी से यात्रा का आग्रह कर रहा है। कालउदायी ने कहा कि आपके पिता महाराज शुद्धोदन ने आपको देखने की इच्छा प्रकट की है। अत: आप अपने परिवारजनों पर अनुग्रह करें। बुद्ध ने अनेकों की इसमें सदगति जानकर इसका समर्थन किया तथा संघ को सूचित करने को कहा वे सभी भी वहां जाएंगे। अत: सभी अपने-अपने कर्तव्य को समझें। 'अवश्य भगवन' कह कर कालउदायी ने संघ को सूचित किया।

अत: हजारों संपूर्णज्ञान प्राप्त अरिहंतों को लेकर, जोकि कोई अंग देश से (बंगाल), कोई मगध (बिहार) से, कोई कपिलवस्तु से थे, वे पैदल ही कपिलवस्तु के लिए निकल पड़े जोकि 60 योजन दूर थी तथा प्रतिदिन वे एक योजन चलते। इस प्रकार दो मास में कपिलवस्तु पहुंचने का उन्होंने निश्चय किया, परन्तु कालउदायी ने महाराज शुद्धोदन को सूचित करने का निश्चय किया । अत: (दिव्य शक्ति से) आकाश मार्ग से आकर उन्होंने कपिलवस्तु राजमहल में स्वयं को प्रकट किया जहां आरंभ में महाराज शुद्धोदन ने उन्हें (सिर मुंडाए हुए भिक्षु रूप में) पहचाना नहीं, उनके पूछने पर कालउदायी ने कहा ''बुद्ध का (धर्म) पुत्र हूं मैं, उन अंगीरस (बुद्ध) के समान कोई भी नहीं जिन्होंने (मृत्युलोक से) पार को भी जान लिया है, तथा मेरे पिता के पिता हैं आप''। महाराज ने उनका प्रेमपूर्वक

स्वागत किया, आसन दिया तथा उनके पात्र में स्वादिष्ट भोजन अर्पण किया। कालउदायी अपने आसन से उठ कर जाने को हुए, महाराज ने उन्हें भोजन ग्रहण करने को कहा, पूछने पर उन्होंने उत्तर दिया कि भोजन तो वे भगवान बुद्ध के साथ ही करेंगे। महाराज शुद्धोदन ने पूछा कि वे अभी कहां हैं। कालउदायी ने बताया कि हजारों शिष्यों के साथ बुद्ध 60 योजन दूरी पर हैं तथा आपसे मिलने के लिए यात्रा पर निकल पड़े हैं।

पुत्र से मिलने की आशा से प्रसन्न होकर महाराज ने कहा ''आप प्रतिदिन अपना भोजन यहां करें तथा पुत्र के कपिलवस्तु आने तक प्रतिदिन उनका भोजन भी उन्हें पहुंचाएं।'' इसे स्वीकार कर कालउदायी ने वहां भोजन किया तदुपरांत उनके पात्र को सुगंधित चूर्ण से धोकर उसमें पकवानों से भरकर दिया और कहा कि ये तथागत (बुद्ध) को दें। कालउदायी ने तत्क्षण पात्र समेत आकाशमार्ग से जाकर भगवान बुद्ध को भोजन समर्पित किया। इस प्रकार प्रतिदिन कालउदायी आकाश मार्ग से आते तथा सूचित करते कि आज भगवान बुद्ध कहां तक पहुंचे तथा स्वयं भोजन कर प्रवचन कर, भगवान के लिए भी भोजन ले जाते। इस प्रकार से बिना देखे भी समस्त राजपरिवार की श्रृद्धा, भगवान के प्रति जागृत हुई।

त्रिपटक – अपदान

(क्रमश:)

> माता पिता धरती पर साक्षात् बह्मा के समान हैं।
>
> \- भगवान बुद्ध

राजभाषा हिन्दी का विकास

डी.के.सेठी
उप प्रबन्धक (रा.भा.)

भारत में विभिन्न जाति, धर्म और भाषा के लोग अनेकता में एकता को दर्शाते हुए दिखाई देते हैं क्योंकि भारत बहुभाषी एवं बहुबोलियों का देश है जहां सभी प्रादेशिक भाषाओं का अपना अलग इतिहास रहा है। परन्तु राष्ट्रीय स्तर पर अकेली हिंदी दीर्घकाल से सभी भारतीय भाषाओं के बीच एक कड़ी रही है। इसके पीछे इसकी सादगी एवं सरलता है जिसे हर एक भाषा-भाषी आसानी से ग्रहण कर लेता है।

हिंदी को राजभाषा के रूप में संविधान द्वारा 14 सितम्बर 1949 को मान्यता प्रदान की गई थी, क्योंकि यही एक ऐसी भाषा थी जिसे अधिक से अधिक लोग बोलते व समझते थे। हर राष्ट्र की अपनी संस्कृति होती है जिसमें वहां के रहने वाले लोगों के खान-पान, रहन-सहन व बोलचाल की झलक मिलती है। भाषा के माध्यम से ही हम अपने विचारों को दूसरों को समझाने में समर्थ होते हैं और एक दूसरे के नजदीक आते हैं। महात्मा गांधी ने कहा था ''मेरे लिए भाषा का प्रश्न स्वराज्य का प्रश्न है''। स्वराज तो हमें मिला परन्तु अंग्रेजी के प्रति हमारा मोह नहीं गया जो हमारी मानसिक गुलामी का परिचायक है। हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जो भारत के अधिकांश भागों में बोली व समझी जाती है इसलिए इसे संविधान में राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित किया गया और इसका विकास निरन्तर जारी है।

हिंदी के विकास के लिए यह जरूरी है कि हम अपनी विचारधारा को बदले और इसे इतना सम्मान दें जितना अन्य देशों के लोग अपनी भाषा को देते हैं। महादेवी वर्मा ने कहा ''किसी दूसरी भाषा को जानना सम्मान की बात है, लेकिन दूसरी भाषा को अपनी भाषा के बराबर दर्जा देना शर्म की बात है''। अपनी भाषा का सम्मान हम तभी कर सकते हैं जब हम प्रत्येक क्षेत्र में केवल उसी का प्रयोग करें जिससे हिंदी का विकास भी होगा और हमें अपने विचारों को प्रस्तुत करने की उचित अभिव्यक्ति भी मिलेगी क्योंकि अपनी भाषा के माध्यम से विचारों को प्रकट करने की जो स्वतंत्रता मिलेगी वो किसी दूसरी भाषा से नहीं मिल सकती।

राजभाषा हिंदी शासन और जनता के बीच की एक ऐसी महत्वपूर्ण कड़ी है जो सरकार की नीतियों को जनता तक पहुंचाने का एक सशक्त माध्यम है। हम अपने सरकारी कामकाज में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करके इसे बढ़ावा देने में एक छोटी सी भूमिका निभा सकते हैं। हम अपना अधिकतर काम हिंदी के माध्यम से ही कर सकते हैं। प्राय: लोग सोचते हैं कि

कार्यालय में प्रयोग में लाई जाने वाली हिंदी अलग और कठिन होती है, परन्तु ऐसा नहीं है आप बोलचाल की साधारण हिंदी का प्रयोग करके अपना कार्यालय का कार्य कर सकते हैं और इसके विकास में अपना योगदान दे सकते हैं। आज राजभाषा इतनी सरल, सुबोध व सुगम हो गई है कि हम आसानी से हिंदी पढ़-लिख सकते हैं। आम प्रचलन के शब्दों को ज्यों का त्यों देवनागरी में लिख सकते हैं जिससे हमारा काम बहुत आसान हो जाता है।

हिंदी में काम करते समय अंग्रेजी शब्दों का हिंदी पर्याय ढूंढने की जगह अन्य भाषाओं के प्रचलित शब्दों को ज्यों का त्यों अपना लें क्योंकि वे हमारी भाषा में इस प्रकार रच बस गए हैं कि हम हिंदी में बात करते समय या कार्य करते समय उनका प्रयोग करते हैं तो हमें यह आभास भी नहीं होता कि ये दूसरी भाषा के शब्द हैं जैसे- टेलीफोन, ट्रेन, स्कूल, कम्प्यूटर इत्यादि।

आज का युग प्रौद्योगिकी का युग है हिंदी में इन्टरनेट तक विकसित किया जा चुका है। हिंदी सॉफ्टवेयर व नवीनतम यांत्रिक सुविधाओं का अधिक से अधिक प्रयोग करें ताकि हिंदी के प्रयोग में जो मूलभूत समस्याएं हैं उन्हें दूर करते हुए सफलतापूर्वक हिंदी में कार्य किये जा सकें। इसके विकास के लिए उदारतापूर्वक दृष्टिकोण अपनाते हुए समर्पण भाव से कार्य किया जाए तभी हम अपने उद्देश्य में सफल हो सकेंगे। हिंदी की सरलता, वैज्ञानिकता और सर्वव्यापकता को देखते हुए इसने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी अपना अधिकार जमा लिया है। हिंदी में कार्य करना आसान है और यदि इच्छाशक्ति है तो इसके लिए किसी पर निर्भर रहने की जरूरत भी नहीं होती केवल हिंदी में काम करने की इच्छा होनी चाहिए।

राजभाषा हिंदी को बढ़ाने के लिए भारत सरकार द्वारा अनेक कदम उठाए गए हैं। सरकार की नीति हिंदी को थोपने की नहीं बल्कि स्वेच्छा से अपनाने की रही है। सरकार के इन प्रयासों में राजभाषा विभाग की स्थापना, अधिनियम, नियम व संसदीय राजभाषा समिति आदि का गठन प्रमुख है। राजभाषा कार्यान्वयन के लिए नियम बनाए जाते हैं और विभिन्न स्तर पर विभिन्न प्रोत्साहन योजनाएं लागू की जाती हैं। आज के समय की यह आवश्यकता है कि वे सभी अधिकारी तथा कर्मचारी जिन्हें हिंदी का ज्ञान है वे राजभाषा हिंदी में अनिवार्य रूप से कार्य करते हुए इसके विकास में अपने सहयोग की आहुति अवश्य डालें।

****

हर भारतीय की शक्ति है हिन्दी
एक सहज अभिव्यक्ति है हिन्दी।

बेटी की विदाई

केशवानन्द द्विवेदी
वरिष्ठ आरेखण अधिकारी

तुम द्वार पे मेरे आये हो, मैं क्या सेवा कर सकता हूँ ,
अरमानों की दुनिया तुमको , मैं आज समर्पित करता हूँ।
माँ की ममता का सागर, ये मेरी आँखों का तारा है ,
कैसे बतलाऊं मै तुमको, किस लाड़ प्यार से पाला है।
मम हृदय हिमालय से निकली , ये कन्या गंगा धारा है,
मै तो केवल संरक्षक था, इस पर अधिकार तुम्हारा है।
लो आज अमानत लो अपनी , करवद्ध निवेदन करता हूँ,
तुम द्वार पे मेरे आये हो................................ .

मैंने तो बेटी पर देखी, कल तक शैशव की पहनाई ,
हो गयी सयानी किन्तु आज, कहती मुझसे शहनाई।
कल जन्मी अब ससुराल चली , ऐसा मैं अनुभव करता हूँ ,
ये कन्यादान रूपी रत्न तुम्हें मैं , आज समर्पित करता हूँ।
तुम द्वार पे मेरे आये हो................................ .

भाईयों से आज बहिन बिछुड़ी , बिछुड़ी माँ से माँ की ममता।
सखी सहेलियों से बिछुड़े , भाई के संग की समता।
ये जाएगी सब रोयेंगे , छलकेगी नयनों की गागर,
रुक न सकेगा स्वज्जनों की, ममताओं का सागर।
गृह भिज्ञ की नव कलियों सी , ये सुमन समर्पित करता हूँ।
तुम द्वार पे मेरे आये हो................................ .

गलतियां बड़ों से भी होती हैं, ये तो अबोध सुकुमारी है,
इस के अपराध क्षमा करना, ये सविनय विनय हमारी है।
तुमने लिया हृदय हमारा, शेष रह गया लेना क्या,
जिसने कन्या ही दे डाली , शेष रह गया देना क्या।
मैं आज पिता कहलाने का, अधिकार समर्पण करता हूँ।
तुम द्वार पे मेरे आये हो................................ .

मात - पिता का झूठा नाता ,   सच्चा नाता अब जानो,
जाओ बेटी अपने घर को, असली घर को अब पहचानो।
सास ससुर की सेवा नित्यप्रति,   हंसी ख़ुशी से तुम करना,
जीवन का आधार ये ही है,   इसे निभाती तुम रहना।
जो मूल मंत्र है जीवन का,   वो तुम को आज बताता हूँ,
तुम द्वार पे मेरे आये हो................................ .

कोई कभी ना कह पाए,   अपने कुल की बेटी है,
देख चरित्र कहे सब कोई , ऊंचे कुल की बेटी है।
ये तो बीहड़ पथ है बेटी ,   बंधन है पर जेल नहीं,
अब तक खेली गुड़ियों के संग,   अब यह गुड़ियों का खेल नहीं।
जो मूल मंत्र है जीवन का ,   वह तुमको आज बताता हूँ।
तुम द्वार पे मेरे आये हो................................ .

सृष्टि नियम गंगा हिमगिरि के,   घर कभी ना रह पायी है,
आंसू कितना भी रोके , पर डोली बढ़ते जाई रही है।
संस्कृति का नियम , प्रगति ही परिवर्तन की माया है,
जाने कैसी घड़ी की , आंसू सहसा भर भर आता हूँ,
तुम द्वार पे मेरे आये हो, मैं   क्या सेवा कर सकता हूँ।

****

ममता का सम्मान है बेटी
माता-पिता का मान है बेटी
ऑगन की तुलसी है बेटी
पूजा की कल्सी है बेटी
तभी तो.....
चिडिया को देख वो बोली पापा मुझे पंख चाहिए
पापा मन ही मन बोले पंख ना होते हुए भी
उड़ जाएगी तू एक दिन

राजगीर भ्रमण – एक अनुभव

रमेश चन्द्र, कनि.प्रोग्रामर
तुर्गा परियोजना कार्यालय, कोलकाता

मैं अपने आप को बहुत ही सौभाग्यशाली समझता हूँ, कि मेरा जन्म राजगीर की पहाड़ियों में अवस्थित एक गाँव में हुआ। मेरा बचपन इन्हीं पहाड़ियों पर चढ़ते-उतरते हुए बीता है। वहाँ की शायद ही कोई जगह होगी जो मेरे बचपन के खेल से अछूती होगी। राजगीर एक बहुत ही खूबसूरत, मनोरम, स्वस्थ्यवर्धक, प्राकृतिक विविधताओं से परिपूर्ण एवं साथ-ही-साथ ऐतिहासिक स्थल है। जगह-जगह पर ऐतिहासिक धरोहर बिखरे पड़े हैं। आज मैं इसके गौरवशाली इतिहास एवं प्राकृतिक सुंदरता से आप लोगों को भी रुबरु कराना चाहता हूँ।

राजगीर बिहार राज्य के नालंदा जिले में स्थित एक शहर है। यह कभी मगध साम्राज्य की राजधानी हुआ करती थी, जिसके बाद मौर्य साम्राज्य का उदय हुआ। पहले इसे राजगृह के नाम से जाना जाता था। वसुमतिपुर, वृहद्रथपुर, गिरिब्रज और कुशग्रपुर के नाम से भी प्रसिद्ध रहे राजगृह को आजकल राजगीर के नाम से जाना जाता है। पौराणिक साहित्य के अनुसार राजगीर बह्मा की पवित्र यज्ञ भूमि, संस्कृति और वैभव का केन्द्र तथा जैन तीर्थंकर महावीर और भगवान बुद्ध की साधना भूमि रही है। इसका ज़िक्र ऋगवेद, अथर्ववेद, तैत्तिरीय पुराण, वायु पुराण, महाभारत, बाल्मीकि रामायण आदि में आता है। जैनग्रंथ विविध तीर्थकल्प के अनुसार राजगीर जरासंध, श्रेणिक, बिम्बसार, कनिक आदि प्रसिद्ध शासकों का निवास स्थान था। जरासंध ने यहीं श्रीकृष्ण को हराकर मथुरा से द्वारिका जाने को विवश किया था।

बुद्ध के समकालीन मगध नरेश बिंबिसार ने शिशुनाग अथवा हर्यक वंश के नरेशों की पुरानी राजधानी गिरिव्रज को छोड़कर नई राजधानी उसके निकट ही बसाई थी। पहले गिरिव्रज के पुराने नगर से बाहर उसने अपने प्रासाद बनवाए थे जो राजगृह के नाम से प्रसिद्ध हुए। पीछे अनेक धनिक नागरिकों के बस जाने से राजगृह के नाम से एक नवीन नगर ही बस गया। गिरिव्रज में महाभारत के समय में जरासंध की राजधानी भी रह चुकी थी। राजगृह के निकट वन में जरासंध की बैठक नामक एक बारादरी स्थित है जो महाभारत कालीन ही बताई जाती है। महाभारत वनपर्व में राजगृह का उल्लेख है जिससे महाभारत का यह प्रंसग बौद्धकालीन मालूम होता है। महाभारत काल में राजगृह तीर्थस्थान के रूप में माना जाता था।

राजगीर पांच चट्टानी पहाड़ियों से घिरा है। जिसका जिक्र महाभारत और रामायण में भी मिलता है। राजगीर की पहाड़ियां विश्व में प्रसिद्ध है। बिहार में राजगीर ही एक ऐसा इलाका है जहाँ

आपको पहाड़ देखने को मिलेंगे वरना समूचा बिहार मैदानी है। राजगीर पांच पहाड़ियों से मिलकर बना है जिनके नाम इस प्रकार हैं विपुलगिरि, रत्नागिरि, उदयगिरि, स्वर्णगिरि और वैभारगिरि। हर पहाड़ी पर कोई न कोई जैन, बौद्ध या हिन्दू मंदिर है। इस प्रकार राजगीर इन तीनों धर्मों का तीर्थ बन जाता है। पहाड़ी पर समानान्तर कटक मिलते हैं, राजगीर गाँव के दक्षिण में कटकों के बीच स्थित घाटी में राजगृह (राजकीय आवास) स्थित है, जिसके बारे में कहा जाता है कि यह महाभारत में वर्णित मगध के पौराणिक राजा जरासंध का आवास था। पहाड़ियों की चोटी पर 40 किलोमीटर के दायरे में बाहरी प्राचीरें देखी जा सकती हैं। ये लगभग पाँच मीटर मोटे और बिना तराशे विशाल पत्थरों से बनी है। ये भग्नावशेष दीवारें सामान्यतः छठी शताब्दी ई. पू. की हैं। एक महत्त्वपूर्ण बौद्ध और जैन तीर्थस्थल के रूप में राजगीर की पहाड़ियाँ गौतम बुद्ध के जीवन से सम्बन्धित हैं। जिन्होंने कई बार यहाँ उपदेश दिए। भूतपूर्व गिरधरकूट या गिद्ध शिखर, जो अब 'छतगिरि' कहलाती है, बुद्ध की प्रिय विश्रामस्थली थी। बैभर पहाड़ी, जिसका मूल नाम वैभवगिरि है, की मीनारों में से एक की पहचान पिप्पला के पाषाणगृह के रूप में की गई है। जिसमें गौतम बुद्ध रहे थे। बैभर पहाड़ी के अनेक स्थलों के साथ पहचानी गई सत्तपन्नी गुफ़ा और पहाड़ी तलहटी में स्थित सोनभंड़ार गुफ़ा में बौद्ध मत की 543 ई. पू. में आयोजित धर्मसभा में सभी धार्मिक सिद्धांतों को अभिलिखित किया गया था। तीसरी और चौथी शताब्दी में जैनों द्वारा सोनभंडार गुफ़ा में उत्खनन कार्य किया गया था। घाटी के मध्य में हुए उत्खनन से एक गोलाकार देवालय का पता चला, जो पाँचवीं शताब्दी की विष्णु और नटराज शिव समेत अनेक देवताओं की महीन चूना-पत्थर से बनी विलक्षण मूर्तियों से अलंकृत हैं। घाटी के आसपास की पहाड़ियों में अनेक आधुनिक जैन मन्दिर हैं, हिन्दू देवालयों से घिरी घाटी में गर्म पानी के सोत्र भी हैं।

आइये अब इस ऐतिहासिक स्थल का भ्रमण करे:

राजगीर शहर से सबसे नजदीक है **'वेणुवन विहार'**। इस वन को बिम्बिसार ने भगवान बुद्ध के रहने के लिए बनवाया था। वेणुवन को बांस का जंगल भी कहा जाता है। यह धम्म व विनय स्थल है। इसके बीच में एक तालाब है, जो कालिन्दा निवापा के नाम से जाना जाता है। ऐसा कहा जाता है कि भगवान बुद्ध प्रतिदिन तालाब से स्नान करके गृद्धकूट पर्वत पर जाकर अपने अनुयायियों के बीच प्रवचन देते थे। कालिन्दा निवापा से सटे उत्तर दिशा में लगभग 30 फीट ऊँची एक भगवान बुद्ध की प्रतिमा है एवं तालाब से पश्चिम दिशा में एक ध्यानकक्ष भी है। यहीं भगवान बुद्ध तपस्या करते थे। वन विभाग द्वारा संरक्षित यह स्थान आज भी पर्यटकों के लिये मनोरम स्थल है। इससे कुछ ही दूर आगे वैभवगिरी पहाड़ी के निचले हिस्से में है **वीरायतन**, जहाँ महावीर की पूरी जीवनी को छोटी छोटी मूर्तियों और कृत्रिम कलाकृतियों से दर्शाया गया है। विरायतन जैन आश्रम की स्थापना वर्ष 1973 में की गई थी। 40 एकड़ क्षेत्र में फैले इस आश्रम में ग़रीबों का नि:शुल्क उपचार किया जाता है। विरायतन तीन दशक में लाखों लोगों का उपचार कर चुका है। यहाँ एक विशाल जैन संग्रहालय और अतिथि गृह भी है।

राजगीर जिस चीज के लिए सबसे ज्यादा जाना जाता है वो है यहां के **गर्म जल के कुण्ड**। वैभव पर्वत की सीढ़ियों पर गर्म जल के कई झरने यानि सप्तधाराएं हैं जहां सप्तकर्णी गुफाओं से जल आता है। इन झरनों के पानी में कई चिकित्सकीय गुण होने के प्रमाण मिले हैं राजगीर की चट्टानों में कुछ ऐसे तत्व पाये जाते हैं जो इन कुंडों के गर्म होने के राज हैं।

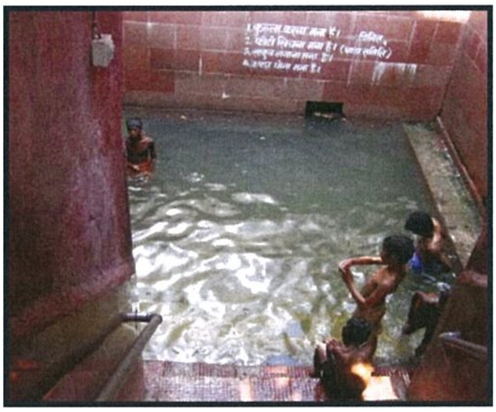

कुण्ड में नहा कर लोगों को तृप्ति का एहसास होता है, कुण्ड-जल चर्मरोगनाशक भी माना जाता है। ब्रह्म कुण्ड और मखदूम कुण्ड दो प्रसिद्द कुण्ड हैं जहाँ पानी का तापमान 45°C तक होता है। ज्यादातर कुंडों के इर्द-गिर्द कोई न कोई मंदिर जरूर है। पौराणिक नगरी राजगीर तीर्थ के बारे में भारतीय ग्रंथ 'वायु पुराण' के अनुसार, मगध सम्राट बसु द्वारा राजगीर में 'वाजपेय यज्ञ' कराया गया था। उस यज्ञ में राजा बसु के पितामह ब्रह्मा सहित सभी देवी-देवता राजगीर पधारे थे। यज्ञ में पवित्र नदियों और तीर्थों के जल की जरूरत पड़ी थी। कहा जाता है कि ब्रह्मा के आह्वान पर ही अग्निकुंड से विभिन्न तीर्थों का जल प्रकट हुआ था। उस यज्ञ का अग्निकुंड ही आज का ब्रह्मकुंड है। उस यज्ञ में बड़ी संख्या में ऋषि-महर्षि भी आते हैं। पुरूषोत्तम मास, सर्वोत्तम मास में यहां धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति की महिमा है। इसके बाद रुख कीजिए राजगीर के प्रसिद्द सोन भंडार की ओर, जो वास्तव में "स्वर्ण भंडार" है। कहा जाता है की इस गुफा में मगध सम्राट बिम्बिसार का सोने का खजाना छुपा हुआ है। गुफा के प्रवेश द्वार पर ही एक छोटा सा कक्ष है जिसे गुफा की सुरक्षा करने वाले सैनिकों के लिए चट्टान काट कर बनाया गया था। खजाने तक जाने वाले रास्ते को एक चट्टान से बंद कर दिया गया था, जिसे आज तक कोई खोल न पाया है।

इस कक्ष की दीवार पर शंख लिपि में रास्ता खोलने का तरीका लिखा हुआ है, वह लिपि बिंदुसार के शासन काल में चला करती थी, लेकिन शंख लिपि आज तक किसी के द्वारा न पढ़े जा सकने के कारण आज तक इसे कोई समझ न पाया है। अंग्रेजों ने भी इस दरवाजे को तोप से उड़ाने की कोशिश की, लेकिन सफल न हुए। आज भी यहाँ तोप के निशान मौजूद हैं। एक बार वैज्ञानिकों ने पुरी गुफा के रहस्य से पर्दा हटाने के लिए इसे बम से उड़ाने के बारे में सोचा था, लेकिन यहाँ की चट्टानों में गंधक जैसे ज्वलनशील तत्त्व पाये जाने के कारण कोई जोखिम नहीं लिया गया। आगे बढ़ते हुए सोन भंडार से मात्र एक किलोमीटर की दूरी पर एक और मगध सम्राट **जरासंध का अखाड़ा** है, कहा जाता है की वे यही युद्ध का अभ्यास करते थे। आज यहाँ सिर्फ कुछ टूटी-फूटी दीवार और महज कुछ चट्टान ही देखने के लिए बाकि रह गई हैं।

अब ले चलते हैं एक दुर्भाग्यपूर्ण स्मारक **बिम्बिसार जेल** की ओर। दुर्भाग्यपूर्ण इसलिए की यह एक पुत्र द्वारा अपने ही पिता को कैदी बना कर रखने की निशानी है। अजातशत्रु ने धन और राज-पाठ के झगडे में अपने पिता बिम्बिसार को यहाँ कैद कर रखा था जिसके अवशेष के रूप में चट्टानों का एक घेरा आज भी मौजूद है। सैकड़ों वर्ष पुराने लोहे के शिकंजे भी स्थल से बरामद हुए हैं, जो की कही और रखे गए हैं। गौरतलब है कि बिम्बिसार ने खुद ही कारागार स्थल का चुनाव किया था ताकि वो गिद्धकुट पर्वत पर रोजाना बुद्ध को जाते हुए देख सके। शान्ति में विश्वास रखने के कारण उसने पुत्र की धृष्टता भी बर्दाशत कर ली।

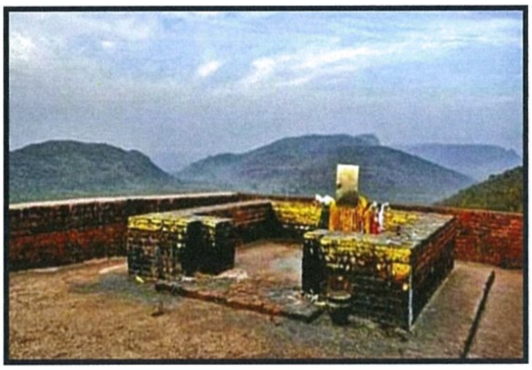

अब बारी है **गृद्धकूट पर्वत** की, यहां का गृद्धकूट पर्वत काफी महत्वपूर्ण है. इसी पर्वत पर महात्मा बुद्ध ने कई उपदेश दिये थे. जापान के बुद्ध संघ ने इसकी चोटी पर एक विशाल **"शान्ति स्तूप"** का निर्माण करवाया है जो आजकल पर्यटकों के आकर्षण का मूख्य केन्द्र है. स्तूप के चारों कोणों पर बुद्ध की चार प्रतिमाएं स्थापित हैं। इस स्तूप तक जाने के लिए रोपवे या केबल कार उपलब्ध है। 2200 फीट लम्बे इस **रज्जुमार्ग** में 114 कुर्सियाँ हैं।

विपुलाचल पर्वत (जैन मंदिर): जैन धर्म के 24 वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी की प्रथम वाणी इसी विपुलाचल पर्वत से ही बिखरी थी, उन्होंने समस्त विश्व को "जिओ और जीने दो" दिव्य सन्देश विपुलाचल पर्वत से दिया था । पहाड़ों की कंदराओं के बीच बने २६ जैन मंदिरों को आप दूर से देख सकते हैं पर वहां पहुंचने का मार्ग अत्यंत दुर्गम है। जैन मतावलंबियो में विपुलाचल, सोनागिरि, रत्नागिरि, उदयगिरि, वैभारगिरि यह पांच पहाड़ियाँ प्रसिद्ध हैं। जैन मान्यताओं के अनुसार इन पर 23 तीर्थंकरों का समवशरण आया था तथा कई मुनि मोक्ष भी गए हैं। विपुलगिरि पर्वत जरासंध की राजधानी थी। भीम और जरासंध के बीच 18 दिनों का मल्लयुद्ध यहीं हुआ था। जिसे **रणभूमि** भी कहा जाता है, जरासंध इसमें भगवान श्रीकृष्ण की कूटनीति से मारा गया था।

इस नगर की पहचान मेंलो के नगर के रूप में भी की गई है। इनमें सबसे प्रसिद्ध मकर और **मलमास मेला** है। शास्त्रों में मलमास तेरहवें मास के रूप में वर्णित है। सनातन मत की ज्योतिषीय गणना के अनुसार तीन वर्ष में एक वर्ष 366 दिन का होता है। धार्मिक मान्यता है कि इस अतिरिक्त एक महीने को मलमास या अतिरिक्त मास कहा जाता है। ऐतरेय ब्रह्मण के अनुसार यह मास अपवित्र माना गया है और अग्नि पुराण के अनुसार इस अवधि में मूर्ति पूजा-प्रतिष्ठा, व्रत, वेदपाठ, उपनयन, नामकरण आदि वर्जित है। लेकिन इस अवधि में राजगीर सर्वाधिक पवित्र

माना जाता है। अग्नि पुराण एवं वायु पुराण आदि के अनुसार इस मलमास अवधि में सभी देवी देवता यहां आकर वास करते हैं किंवदंती है कि भगवान ब्रह्मा से राजा हिरण्यकश्यप ने वरदान मांगा था कि रात-दिन, सुबह-शाम और उनके द्वारा बनाए गए 12 मास में से किसी भी मास में उसकी मौत न हो। इस वरदान को देने के बाद जब ब्रह्मा को अपनी भूल का अहसास हुआ, तब वे भगवान विष्णु के पास गए। भगवान विष्णु ने विचारोपरांत हिरण्यकश्यप के अंत के लिए 13वें महीने का निर्माण किया। धार्मिक मान्यता है कि इस अतिरिक्त 1 महीने को मलमास या अधिकमास कहा जाता है। इसी अधिकमास में मगध की पौराणिक नगरी राजगीर में प्रत्येक तीन साल पर विराट मलमास मेला लगता है।

इसके अलावा राजगीर में अन्य बहुत सारे धार्मिक एवं ऐतिहासिक स्थल हैं जैसेः दिगम्बर जैन मन्दिर, लाल मन्दिर, आचार्य महावीर कीर्ति दिगम्बर जैन सरस्वती भवन, सप्तपर्णी गुफा, मनियार मठ, सुरक्षा प्राचीर, गिरियक स्तूप, घोरकटोरा आदि-आदि।

अब आप भी समझ गए होंगे कि मैं अपने आप को क्यों सौभाग्यशाली समझता हूँ। ऐसे ऐतिहासिक जगह से, जिसने धर्म एवं इतिहास के क्षेत्र में भारतवर्ष को गौरवान्वित किया हो, इतने करीब से ताल्लुक रखने वाले शख्स को तो गर्व होना ही चाहिए।

****

<u>बड़ी सोच</u>

एक बार एक आदमी ने देखा कि एक गरीब फटेहाल बच्चा बड़ी उत्सुकता से उसकी महंगी ऑडी कार को निहार रहा था। गरीब बच्चे पर तरस खा कर अमीर आदमी ने उसे अपनी कार में बैठा कर घुमाने ले गया।

लड़के ने कहा : साहब आपकी कार बहुत अच्छी है, यह तो बहुत कीमती होगी न...।

अमीर आदमी ने गर्व से कहा : हां, यह लाखों रुपए की है।

गरीब लड़का बोला : इसे खरीदने के लिए तो आपने बहुत मेहनत की होगी?

अमीर आदमी हंसकर बोला : यह कार मुझे मेरे भाई ने उपहार में दी है।

गरीब लड़के ने कुछ सोचते हुए कहा : वाह! आपके भाई कितने अच्छे हैं।

अमीर आदमी ने कहा : मुझे पता है कि तुम सोच रहे होंगे कि काश तुम्हारा भी कोई ऐसा भाई होता जो इतनी कीमती कार तुम्हे गिफ्ट देता!

गरीब लड़के की आंखों में अनोखी चमक थी, उसने कहा : नहीं साहब, मैं तो आपके भाई की तरह बनना चाहता हूं..

सार : अपनी सोच हमेशा ऊंची रखो, दूसरों की अपेक्षाओं से कहीं अधिक ऊंची, तो तुम्हें बड़ा बनने से कोई रोक नहीं सकता।

******

भारत में पाश्चात्य संस्कृति

विमल किशोर
प्रारूपकार

"कुछ शॉपिंग करनी पड़ेगी, कपड़े सब पुराने हो गए हैं।" मैंने भाई से कहा। "जॉन प्लेयर पर बाय 2 गेट 1 फ्री है।" "पेंटालून पर भी डिस्काउंट है।" भाई ने थोड़ा उत्साह दिखाया। "ठीक है, चल कर देखते हैं।" मैंने बात खत्म की। मैं कल ही भूटान से लौटा था। जहां तकरीबन ढाई बरस की पोस्टिंग के बाद फिर से अपने देश, अपने शहर में वापस आ पहुंचा था। । कुछ पुरानी यादों को ढूँढता, फिर उसी माहौल को तलाशता। फिर से अपने आज में अपने बीते हुए कल की परछाई को ढूँढ रहा था मैं। शायद यह हम हिंदुस्तानियों की फितरत ही रही हो जो हम अपने कल से जुड़े रहने का प्रयास करते हैं।

भूटान में लोग अधिकतर पाश्चात्य संस्कृति का अनुसरण करते है। परिधान, जीवन-शैली या फिर रीति-रिवाज की बात करें तो सभी पर काफी हद तक पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव स्पष्ट तौर पर महसूस किया जा सकता है। हालांकि उनके अपने पारंपरिक परिधान और रीति-रिवाज भी हैं परंतु ज़्यादातर वे सब औपचारिक या सरकारी स्थानों पर प्रयोगरत हैं। दैनिक-चर्या में नयी पीढ़ी में से भूटानी परम्पराओं को तवज्जो देने वाले लोगों का प्रतिशत कम ही है। गाड़ी में बैठा मैं खिड़की से बाहर निहार रहा था और यह महसूस कर रहा था कि दिल्ली में भी काफी बदलाव आ चुके थे। महज ढाई बरस के अरसे बाद आए हुए इस बदलाव को महसूस किया जा सकता था। सड़क पर ट्रेफिक की मात्रा के साथ-साथ महिला दुपहिया वाहन चालकों की संख्या में बढ़ोतरी साफ तौर पर महसूस की जा सकती थी। परिधानों में भी अतीत की परछाई की झलक आंशिक ही बची थी। जाहीर तौर पर शॉपिंग मॉल में एक भी ब्रांड भारतीय नाम से नहीं था। हो सकता है कि एक-दो ब्रांड भारतीय हो लेकिन एक झलक में इसकी पहचान बहुत मुश्किल थी। यह कोई पहला अवलोकन नही, अपितु पिछले कुछ सालों से मैं भी विदेशी ब्राण्ड्स का ही कायल रहा हूँ। विदेशी वस्तुओं और सुविधाओं का प्रयोग शायद बेहतर गुणवत्ता के चलते प्रगति पर है। काश कि अपने देश में हमें अपने देश की बनी हुई वस्तुओं में उस स्तर की विभिन्नता व गुणवत्ता मिल पाये। लेकिन यह सब तो व्यापार है। अगर भारतीय उद्योगपति इस और ध्यान देंगे तो शायद यह संभव हो पाएगा। लेकिन, कुछ और बातें मुझे खटक रही थी। कुछ और बदलाव थे जिनको मैंने मोटे तौर पर महसूस किया।

जानें क्यूँ मन में विचार आया की कल तक चार लोग अँग्रेजी को ही कोस रहे थे, लेकिन क्या आज हमारे जीवन के अधिकतर पहलुओं पर पाश्चातीयकरण की परत नहीं चढ़ती जा रही? जीवन स्तर में सुधार के साथ-साथ अँग्रेजी भाषा की अहमियत हमारी दिनचर्या में बढ़ती ही है, यह तो जग-विगत है। लेकिन क्या हम लोग दिन-प्रतिदिन पाश्चातीयकरण के रंग में खुशी-खुशी रंग जाने को तैयार नही बैठे? क्या कारण हैं की हम लोग भारतीय तौर-तरीकों को अंगूठा दिखा कर अंग्रेज़

बनने को आतुर हैं? क्या कारण है कि हम लोग पश्चिमी संस्कृति को भारतीय संस्कृति पर तरजीह दे रहे हैं? मैंने विषय के आधार को तलाशने की कोशिश की।

स्त्री और पुरुष किसी भी समाज के प्रमुख घटक हैं। किसी भी सभ्यता में वही व्यवहार होता है जो स्त्री और पुरुष मिल कर तय करते हैं। या फिर यह कहें की जिन संस्कारों को किसी समाज के पुरुष या स्त्री नकार देते हैं, वह संस्कार उस संस्कृति का हिस्सा नहीं बन पाते। भारतीय संस्कृति भी समाज के इन दो प्रमुख घटकों की समय-समय पर सोच और समझ का नतीजा है। लेकिन वैश्वीकरण ने हमें अलग-अलग देशों की सभ्यताओं और तौर-तरीकों से वाकिफ कराया। निश्चित तौर पर दूर के ढ़ोल सुहावने लगे और पश्चिमी सभ्यता के प्रति आकर्षण जागा। एक ही रास्ते पर चलते रहने की बोरियत भी इसका एक कारण हो सकती है। और यह भी हो सकता है कि सच ही में पाश्चात्य संस्कृति के तौर तरीके हमसे कहीं बेहतर हों। मुख्य बात यह हैं की हम लोग इस जीवन शैली को अपनी संस्कृति का हिस्सा बनाने को आतुर हैं।

जीवन एक आकर्षण है। एक आकर्षण उस उम्मीद के प्रति या फिर उस सकारात्मकता के प्रति जो हमें सचेत बनाए रखे। बचपन में हम खेल के प्रति आकर्षित रहते हैं, जवानी में बेहतर स्थायित्व के प्रति और उसके बाद बेहतर जीवन स्तर के प्रति। यही आकर्षण हमें विभिन्न भौतिक-अभौतिक सुविधाओं के प्रति आकर्षित करता है। यह आकर्षण स्वाभाविक है। यह आकर्षण मनोवैज्ञानिक भी है। जीवन में आगे की तरफ अग्रसर रहने के लिए आकर्षण ही हमें संघर्ष और सकारात्मकता का मार्ग प्रदान करता है। बिना मंज़िल के वैसे भी जीवन पशु समान है। अगर हम अपने मस्तिष्क को बेहतर जीवन की प्राप्ति हेतु उपयोग ही नहीं करेंगे तो समय निकल जाएगा और हम पीछे रह जाएंगे। इसी मनोविज्ञान के तहत भारत में हम अपने जीवन जीने के तरीकों को बदल रहे हैं। लेकिन आकर्षण के साथ-साथ मूल्यांकन भी बेहद ज़रूरी है। एक अपरिपक्व मनुष्य और परिपक्व मनुष्य के मनोविज्ञान में सबसे बड़ा फर्क मूल्यांकन का है। मूल्यांकन इस बात का, कि जिस आकर्षण को हम प्राप्त करने को आतुर हैं।

क्या वह सच में हमें संतुष्ट करेगा? या
फिर क्या वह संतुष्टि आंशिक तो नहीं?
हमारे मूल्य क्या हैं?
हमारी पृष्ठभूमि क्या है?
हमारा पालन-पोषण कैसे हुआ है? और हमारे संस्कार क्या हैं?
यह सब सवाल निर्धारित करते हैं कि हमारे जीवन की जरूरतें क्या हैं? क्योंकि हमें वही सब संतुष्ट कर सकता है जिसकी हमें आदत पड़ गयी हो या जिसे हम सरल शब्दों में सुविधा कहते हैं।

कुछ पाने के लिए कुछ खोना ही पड़ता है। यह सभी जानते हैं। भारतीयता से पश्चिमी रहन-सहन की तरफ बढ़ने की कीमत क्या है?, यह हमें समझ लेना चाहिए। आज से तकरीबन पच्चीस-तीस साल पहले मैंने अपना बचपन जिया और उसी क्रम में किशोरावस्था में पहुंचे। हमने इस दौरान

हरे भरे खेत खलिहान देखे। तालाब-सरोवर देखे। खुले-खुले कस्बे देखे। नीला आसमान देखा। घर में चारपाइयाँ देखी। तंदूर की रोटियाँ खाई और दूध से बने ताज़ा लस्सी, घी, मक्खन का स्वाद लिया। बारिश को जिया। सकून को महसूस किया। हर इंसान के माथे पर सकून के साक्षी रहे। लोगों के आपसी मेल-जोल को भी देखा। भारतीयता से पश्चिमी रहन-सहन की तरफ बढ़ने की यही कीमत है। पश्चिमी संस्कृति की कीमत इस भारतीय संस्कृति को बदलना है।

मैं यह नहीं कहना चाहता हूँ कि सभी लोगों के लिए यही जीवन सर्वोतम है। हम सभी की जीवन में अपनी-अपनी अभिलाषाएँ हैं, अपनी-अपनी मंज़िलें हैं। लेकिन पश्चिमी रहन-सहन के लिए भारत में शर्त यह है कि खेत-खलिहान, जल स्रौत, प्रकृति व देसी जीवन प्रारूप का नियमित हनन होता रहे। आज कल हर गाँव धीरे-धीरे शहर में तब्दील होकर, कंक्रीट-जंगल ही तो बनता जा रहा है। लोग अपने-अपने छोटे घरों या फ्लैट्स में नए-नए विदेशी ब्रांड इस्तेमाल करके यह महसूस करतें हैं कि वह भी समृद्ध हो गए हैं। बड़े-बड़े खेतों की सस्ती हरियाली ज़मीन छोटे और महंगे घरों में बदल गई है। शॉपिंग मॉल, कान्वेंट स्कूल, अँग्रेजी शिष्टाचार, महिलाओं के छोटे-झीने या फिर शरीर से चिपके हुए परिधान आदि मॉडर्न होने का प्रमाण है। पाश्चात्य आकर्षण ने अपनी जड़ें इस देश में गहरी जमा ली हैं। अब यह मूल्यांकन हमें करना है कि हमें अपना सांस्कृतिक भारतीय जीवन सतुष्ट कर पाएगा या फिर यह पश्चिमी आकर्षण।

******

** धार्मिक महिला और नास्तिक पड़ोसी **

एक गाँव में एक धार्मिक प्रवृत्ति की महिला रहती थी. वह हर रोज सुबह-सुबह अपने घर से निकलती और जोर-जोर से चिल्ला कर भगवान के नाम के जयकारे लगाती। उसकी इस हरकत से उसका पड़ोसी, जो कि पूरी तरह से नास्तिक था, बहुत चिढ़ता था. जैसे ही महिला जयकारा लगाती, वह भी बाहर निकल कर उससे कहता – "क्यों गला फाड़ रही है, दुनिया में कोई भगवान नहीं है ..."

लेकिन महिला उसकी बात को अनसुना कर देती और जयकारा लगाना जारी रखती। एक दिन महिला के घर में खाने को कुछ भी नहीं था, तो वह बाहर आकर चिल्लाने लगी – "भगवान तेरी जय हो ... आज मेरे लिए खाना भेज देना ... तब तक मैं मंदिर होकर आती हूँ !" पड़ोसी ने यह सब सुना तो मजे लेने के लिए वह फ़ौरन दुकान पर गया और खाने की सामग्री लेकर महिला के घर के बरामदे में छोड़ गया। महिला मंदिर से लौटकर आई तो खाना देख कर प्रसन्नता से चिल्लाई – "भगवान तेरी जय हो ... खाना भेजने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद !"

पड़ोसी ने सुना तो वह फ़ौरन बाहर आकर बोला – "अरी मूर्ख, यह सब तेरा भगवान नहीं लाया। मैं लाया हूँ अपने पैसे से ...!!" पड़ोसी की बात सुन कर महिला दुगुने जोश से चिल्लाई – "भगवान तेरी हजार बार जय हो .... मुझे खाना भेजने के लिए और उसका भुगतान इस कमबख्त नास्तिक की जेब से करवाने के लिए ... !!!"

मदर्स डे और भारत

सी.एच.उदयश्री
डा.ए.आ., हैदराबाद कार्यालय

मां के बिना हम नहीं हैं। अपनी कोख में ममता से हमें प्यार भरा जीवन देती है मां। उस ममता की तुलना में अपना जीवन काल ऋण भी कम है।

मदर्स डे – मां और उसके मातृत्व को सम्मान देने वाला उत्सव है। यह मई महीने में द्वितीय रविवार को मनाया जाता है। 1908 में यह पहली बार वेस्ट वर्जिनिया में उन्ना जारविस ने मनाया था। मदर्स डे अलग-अलग देशों में अलग-अलग तरीकों से मनाया जाता है। हिन्दू परम्परा के अनुसार मदर्स डे को 'माता तीर्थ औशी' या माता तीर्थ यात्रा पखवाड़ा कहा जाता है और हिन्दू जनसंख्या ज्यादा होने के कारण नेपाल जैसे देश में यह अप्रैल या मई में नया चंद्रमा दिन पर मनाया जाता है।

पाश्चात्य देशों में एक दिन मदर्स डे त्यौहार की तरह मनाया जाता है और बच्चे मां को उपहार देते हैं। भारत एक प्राचीन परम्परा, विविध संस्कृति और विविधताओं में एकता दिखाने वाला देश है। हालांकि मदर्स डे एक विशेष दिन पर घोषित करे, हर दिन माता पिता की सेवा और प्यार में हमारा देश भारत विश्व में सबसे पहले स्थान पर है। यह गंभीरता का विषय है कि आज हम बढती टेक्नोलॉजी और पाश्चात्य संस्कृति को अपनाते हुए धीरे-धीरे अपनी संस्कृति को भूलते जा रहे हैं। संयुक्त परिवार से छोटे यानि एकल परिवार की ओर बढने से आज के बच्चे अपने बुजुर्गों का सम्मान करना नहीं सीख सकते। वे अपनी संस्कृति को भूल कर विदेशी संस्कृति को अपना रहे हैं जिसे छोडकर चलना होगा। आज कई विदेशी देश भारत की गौरवनीय संस्कृति को अपना रहे हैं। हमारा धर्म और संस्कृति हमें हर दिन माता पिता की सेवा करना सीखाती है और इसी परम्परा के चलते हुए भारत आगे बढ़े। मदर्स-डे जैसा महत्वपूर्ण दिन केवल एक दिन सीमित न रहे बल्कि हर दिन मनाने में हम आगे रहें।

******

भविष्य के सपनों में मत खाओ और भूतकाल में मत उलझो सिर्फ वर्तमान पर ध्यान दो। जीवन में खुश रहने का यही एक सही रास्ता है।

\- महात्मा बुद्ध

पहेली जिन्दगी की

पूजा कुमारी
डाटा एन्ट्री आपरेटर
(अवस्थापना प्रभाग)

ऐ जिन्दगी तू क्यों अनसुलझी है,
जहाँ समझूँ तू सुलझी है, वहीं तू पहेली है।
समझ चुकी थी, हो चुका सवेरा था,
पर मुझे नही पता वहाँ भी घना कोहरा था,
दिख नही रहा था कुछ, रात से भी अंधेरा था।
शाम हुई, महफिल सजी पर महफिल भी एक बहाना था,
सारी रात गुजर गई, दिन गुजर गया उस पल के इंतजार में,
आया वो पल भी, पर मुझे क्या पता वो पल भी हारा था।
आसमां साफ थी, चमक रहा सितारा था,
चाँद की शीतलता को पी रही धरा थी,
वक्त गुजर गए, हो गया सवेरा था,
सूरज की तपिश बढ़ी, पराजित हुए, सिर झुकाये खड़ा, निशा का अंधेरा था।
हार नही सकती रोशनी कभी अँधियारों से, हर पल वो देगी मात,
चाहे वक्त कितना भी क्यों न बदल जाए।
इक वक्त था वो...................... चलता था,
गिरता था, फिर संभल कर खुद ही उठता था,
भीड़ में था फिर भी अकेला था, दूजा हाथ न कोई सहारा था।
उठती थी समंदर की लहरें दिल मे,
चूर-चूर करती थी दुनिया की सच्चाई रग-रग को,
अन्तर्मन कहता की हर लोग अपने हैं, हर जान अपनी है,
लेकिन ये क्या देखा.......! इक-इक करके सबने तोड़ा मेरे भ्रम को।
ऐ ज़िंदगी तुझे शुक्रिया.......................................
अपने-पराए का तूने भेद बताया,
जौहरी जैसा पारखी मुझे बनाया,
हर कोई तुझे समझ न पाएगा, जो समझ गया तुझे,
वो अपने युग का महारथी कहलाएगा।
तू किसे, कहाँ, किस मंजिल पर लाओगी,
कोई ना जाने तोड़ेगी तू कब और कैसे, किस-किस के संशय को,
धोयेगी दामन मे लगे हर एक अमित दाग को,
पोछेगी अपने आँचल से, नयन से बहते अश्रु को।

मेल होते हुए भी, सागर की लहरों-किनारों का कोई मेल ना था,
जीवन जीते हुए भी जीना उसे, कोई खेल ना था,
मेरे जीवन का मोल होते हुए भी, राहों के एक मोड पर कोई मोल ना था।
कहते हैं लोग कि तेरे हाथों की लकीरें बड़ी अच्छी हैं,
किस्मत तेरी बड़ी अच्छी है....................................
पर किस्मत की हर माया तेरे से, जीवन की हर डोर तेरे से,
हर प्राणी तेरे से, हर प्राणी का अस्तित्व तेरे से,
मैं भी तेरे से, मेरा हर शब्द तेरे से,
बिना पहचान तेरी, मेरी कोई पहचान ना थी, जीवन की बहती निर्झर धारा में,
आन होते हुए भी कोई आन ना था।
अब इक वक्त है ये ....
मंजिल मेरे साथ है तो हर हाथ हमारा है, हर भीड़ हमारी है,
हर लोग अपने हैं, हर जान हमारी है।
ऐ ज़िंदगी............तू कभी सुलझी है, तू कभी अनसुलझी है,
यही तो तेरी अनोखी अदाएँ हैं, यही तो तेरी अनोखी पहेली है।

******

समीकरण

कुमारी चेतना माहैार
सुपुत्री श्रीमती शारदा रानी, वरि. सहायक

पृथ्वी पर जब जीवन-क्रम आरम्भ हुआ, तक उसका समीकरण था – **प्रकृति + मनुष्य = जीवन**।

शनैः-शनैः पृथ्वी पर औजार आए जिनसे मानव का कार्य सुगम हो गया। परिवर्तित स्थितियों में समीकरण भी परिवर्तित होकर **प्रकृति + मनुष्य + मनुष्य = जीवन गया**।

कुछ समय पश्चात् पृथ्वी पर यंत्रों का पर्दापण हुआ, जो इतने प्रभावशाली थे कि मनुष्यों को भी अपने रूप में ढ़ाल लिया। फलतः समीकरण बदलकर **मनुष्य + मनुष्य = जीवन गया**।

आज तक मौन व अपरिवर्तनशील रही पृथ्वी ने अब अपने मर्यादित क्रूलों को स्वच्छन्द कर दिया। परिणामस्वरूप समीकरण **प्रकृति + प्रकृति = विनाश हो गाय**, जिसे कोई औजार अथवा यंत्र भंग नहीं कर पाया।

******

50वें स्थापना दिवस समारोह के अवसर पर पूर्व-कार्यक्रमों की श्रृंखला के अंतर्गत विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन

प्रथम कार्यक्रम: "वाप्कोस रन-हम फिट तो इण्डिया फिट" – इण्डिया गेट-16.06.2018

वाप्कोस के 50वें स्थापना दिवस समारोह के पूर्व-कार्यक्रम की श्रृंखला का शुभारंभ दिनांक 16 जून 2018 को दिल्ली की शान इण्डिया गेट पर **"वाप्कोस रन-हम फिट तो इण्डिया फिट"** के साथ हुआ।

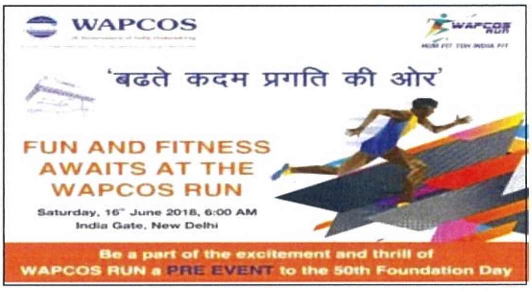

माननीय राज्यमंत्री, संसदीय मामले एवं जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण, श्री अर्जुन राम मेघवाल, माननीय राज्यमंत्री, मानव संसाधन विकास और जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण डा0 सत्य पाल सिंह, सचिव, जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण श्री यू.पी.सिंह, डॉ0 किरण पांडया एवं डा0 एस.के.सिंह, स्वतंत्र निदेशक, वाप्कोस, सीएमडी, वाप्कोस, श्रीमती यू.पी.सिंह, श्रीमती रीमा सिंघल एवं श्रीमती मीना मिश्रा इस वाप्कोस रन को यादगार बनाने के लिए उपस्थित थे।

श्री अर्जुन राम मेघवाल, माननीय राज्यमंत्री, संसदीय मामले एवं जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण, उपस्थित प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन करते हुए।

वाप्कोस रन की मधुर बेला पर सर्वप्रथम श्री आर.के.गुप्ता, सीएमडी, वाप्कोस द्वारा मुख्य अतिथि माननीय श्री अर्जुन राम मेघवाल, माननीय डा0 सत्यपाल सिंह, श्री यू.पी.सिंह एवं अन्य उच्चाधिकारियों का पुष्पगुच्छ देकर स्वागत किया गया। स्वागत उपरांत माननीय राज्य मंत्रियों, सीएमडी, वाप्कोस, एवं उच्चाधिकारियों ने अपने प्रेरणादायक विचारों से प्रतिभागियों को संबोधित किया। माननीय डा0 सत्यपाल सिंह ने बताया कि पहला सुख निरोगी काया दूसरा सुख घर पर माया यानि दुनिया में जितने भी कार्य है उनके मूल में अच्छा स्वास्थ्य है। पैसे से आप नींद, मन की शांति या भूख नहीं खरीद सकते, अच्छा स्वास्थ्य ही मूल मंत्र है। उन्होंने स्वस्थ रहने का मूल मंत्र बताया कि पैर गर्म, पेट नर्म, सिर ठण्डा आए बीमारी तो लगाओं डण्डा। माननीय श्री अर्जुन राम मेघवाल ने माननीय प्रधान मंत्री की चुनौती - हम फिट तो इण्डिया फिट को एक छोटी सी कहानी के रूप में समझाया कि हमारे राजस्थान में एक कहानी है दो चिड़ी नीले आसमान में उड़ रही थीं, तभी आंधी आ जाती है, छोटी चिड़ी डर जाती है और बड़ी चिड़ी से कहती है कि चलो पास के पेड़ पर कुछ देर रूक जाते हैं तभी बड़ी चिड़ी कहती है कि इन आंधियों से कह दो **कि अपनी औकात में रहे हम परों से नहीं हौसलों से उड़ते हैं।** उन्होंने कहा हमें जीवन में आने वाले अवरोधों से घबराना नहीं है उनको सफलतापूर्वक पार करना है। 50वें वर्ष का पड़ाव बहुत ही महत्वपूर्ण होता है, अभी तो ओर आगे जाना है और इन प्रेरणादायक शब्दों ने उपस्थित प्रतिभागियों में एक नई स्फूर्ति का संचार किया।

माननीय राज्यमंत्री, संसदीय मामले एवं ज. सं., न. वि. और गं. सं., श्री अर्जुन राम मेघवाल, माननीय राज्यमंत्री, मा. सं. वि. और ज. सं., न. वि. और गं. सं., डा0 सत्य पाल सिंह, सचिव, ज. सं., न. वि. और गं. सं., श्री यू.पी.सिंह, डॉ0 किरण पांडया एवं डा० एस.के.सिंह, स्वतंत्र निदेशक, वाप्कोस, श्रीमती यू.पी.सिंह एवं सीएमडी, वाप्कोस श्री आर.के.गुप्ता - वाप्कोस रन का शुभारंभ करते हुए।

वाप्कोस से श्री पंकज कपूर, निदेशक (वित्त), श्री अनुपम मिश्रा, कार्यकारी निदेशक (परियोजना व मानव संसाधन विकास), डा0 अमन शर्मा, कार्यकारी निदेशक (पर्यावरण, गंगा संरक्षण व निर्माण प्रबंधन), श्री ए.एन.एन.प्रसाद, कार्यकारी निदेशक (योजना एवं विकास), श्री शंभू आजाद, कार्यकारी निदेशक (जल संसाधन विकास) तथा अन्य उच्चाधिकारियों सहित लगभग 450 कार्मिकों ने बड़े उत्साह के साथ इस वाप्कोस रन में भाग लिया।

वाप्कोस रन के अवसर पर श्री अर्जुन राम मेघवाल, डा० सत्यपाल सिंह, श्री यू.पी.सिंह तथा श्री आर.के.गुप्ता ने सभी प्रतिभागियों का हौसला बढ़ाया तथा रन शुरु करने के लिए झंडा ऊपर किया और स्वयं भी इस रन में भाग लिया। रन के दौरान सभी प्रतिभागियों का उत्साह देखते ही बनता था।

माननीय राज्यमंत्री, संसदीय मामले एवं ज. सं., न. वि. और गं. सं., श्री अर्जुन राम मेघवाल, माननीय राज्यमंत्री, मा. सं. वि. और ज. सं., न. वि. और गं. सं., डा0 सत्य पाल सिंह, सीएमडी, वाप्कोस एवं अन्य प्रतिभागी वाप्कोस रन में भाग लेते हुए।

प्रतिभागियों को निश्चित किए स्थान पर पहुंच कर एक बैंड दिया गया, उसे ले कर वापस रन शुरू करने के स्थान पर आना था। सभी ने अपनी रन सफलतापूर्वक पूरी की जिसके बाद विजेताओं को मेडल तथा सभी प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र प्रदान किए गए।

द्वितीय कार्यक्रम : "माई ट्री (पेड लगाओ-जीवन बचाओ)" - भगवान महावीर वनस्थली-18.06.2018

वाप्कोस के 50 वें स्थापना दिवस समारोह की श्रृंखला में **माई ट्री** के अंतर्गत वृक्षारोपण दूसरा कार्यक्रम था जोकि दिनांक 18 जून 2018 को भगवान महावीर वनस्थली (रिज एरिया) में सफलतापूर्वक आयोजित किया गया ।

इस वृक्षारोपण कार्यक्रम में माननीय राज्यमंत्री, मानव संसाधन विकास और जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण, डा० सत्य पाल सिंह, सचिव, जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण, श्री यू.पी.सिंह व डा० एस.के.सिंह शामिल हुए। इस अवसर पर श्रीमती यू.पी.सिंह, श्रीमती रीमा सिंघल, श्रीमती एस.के.सिंह व श्रीमती मीना मिश्रा भी उपस्थित थीं। वाप्कोस से श्री आर.के.गुप्ता, सीएमडी, श्री पंकज कपूर, निदेशक (वित्त), श्री अनुपम मिश्रा, कार्यकारी निदेशक (परियोजना व मानव संसाधन विकास), श्री अमन शर्मा, कार्यकारी निदेशक (पर्यावरण, गंगा संरक्षण व निर्माण प्रबंधन), श्री ए.एन.एन.प्रसाद, कार्यकारी निदेशक (योजना एवं विकास) तथा अन्य उच्चाधिकारियों सहित वाप्कोस कार्मिकों ने भाग लिया।

माननीय राज्यमंत्री, मा. सं. वि. और ज. सं., न. वि. और गं. सं., डा० सत्य पाल सिंह – वृक्षारोपण करते हुए।

सीएमडी, वाप्कोस द्वारा माननीय अतिथियों को पुष्पगुच्छ भेंट कर कार्यक्रम की शुरुआत की गई। माननीय राज्यमंत्री डा० सत्यपाल सिंह ने इस अवसर पर कहा कि भारतीय जीवन शैली में पर्यावरण सुरक्षा निहित थी परन्तु आधुनिक जीवन शैली ने पर्यावरण पर दुष्प्रभाव डाला है। भारत सरकार वृक्षारोपण कार्यक्रम केवल वृक्षों की संख्या बढ़ाने के लिए ही नहीं करती अपितु इसका उद्देश्य पर्यावरण पर पड़ रहे दुष्प्रभाव को दूर करना भी है। श्री यू.पी.सिंह, सचिव, जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण ने अन्य बातों के साथ मैथलीशरण गुप्त की कविता सुनाई **"हम कौन थे, क्या हो गए हैं, और क्या होंगे अभी आओ विचारें आज मिल कर, यह समस्याएं सभी"**। उन्होंने अपने विचार प्रकट करते हुए वृक्षों की महत्वता के बारे में वहां उपस्थित जन समूह को महत्वपूर्ण जानकारी दी और बताया कि वृक्षों को काटा न जाए बल्कि अधिक से अधिक पौधे लगाए जाएं। इसके बाद माननीय राज्यमंत्री द्वारा वृक्षारोपण किया गया तद्परांत वहां उपस्थित सभी वाप्कोस कार्मिक अपने-अपने नाम के पौधे लगाते हुए मन ही मन हर्षित हो रहे थे कि हमने भी भावी पीढ़ी के लिए कुछ किया और देखते ही देखते बाग नए पौधों से भर गया।

सचिव, ज. सं., न. वि. और गं. सं., श्री यू.पी.सिंह वृक्षारोपण करते हुए।

सीएमडी, वाप्कोस वृक्षारोपण करते हुए।

सीएमडी एवं उच्चाधिकारी, वाप्कोस वृक्षारोपण करते हुए।

निदेशक (वित्त) वृक्षारोपण करते हुए।

वाप्कोस के अन्य कार्मिक वृक्षारोपण करते हुए।

डा० अमन शर्मा, का.नि. (पर्यावरण गंगा संरक्षण व निर्माण प्रबंधन) ने बताया कि भगवान महावीर वनस्थली (रिज एरिया) दिल्ली के आक्सीजन का मुख्य स्रोत है । इसें दिल्ली का lungs भी कहा जाता है। यहां वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित होते रहते हैं और हमें इसमें ओर अधिक वृक्ष लगाते रहने चाहिए ताकि यह स्रोत ओर अधिक सुदृढ़ हो सके। हर व्यक्ति को पौधे लगाने चाहिए ताकि आपके द्वारा लगाए गए पौधों से दूसरे लोगों को फायदा हो। हम भी अन्य व्यक्तियों द्वारा लगाए गए पौधे जो अब वृक्ष बन गए हैं का भरपूर लाभ उठा रहे हैं चाहे आक्सीजन हो, फल हो या आस पास फैली हरियाली। माई ट्री कार्यक्रम वाप्कोस की ओर से इस दिशा में छोटा-सा योगदान है।

तृतीय कार्यक्रम : "नदी सफाई (हमारी नदियां हमारा भविष्य)" – छठ घाट-20.06.2018

वाप्कोस के 50 वें स्थापना दिवस समारोह की श्रृंखला का तीसरा कार्यक्रम नदी सफाई था जोकि दिनांक 20.06.2018 को प्रात: दिल्ली के छठ घाट पर आयोजित किया गया। जैसाकि आप सब जानते हैं कि छठ घाट को वाप्कोस द्वारा गोद (adopt) लिया गया है जहां समय-समय पर सफाई कार्यक्रम आयोजित किए जाते रहते हैं।

माननीय राज्यमंत्री, संसदीय मामले एवं ज. सं., न. वि. और गं. सं., श्री अर्जुन राम मेघवाल, सचिव, ज. सं., न. वि. और गं. सं., श्री यू.पी.सिंह, सीएमडी, वाप्कोस छठ घाट की सफाई में श्रमदान करते हुए।

इस कार्यक्रम में माननीय राज्यमंत्री, संसदीय मामले एवं जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण श्री अर्जुन राम मेघवाल तथा श्री यू.पी.सिंह, सचिव, जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय भी उपस्थित थे। माननीय अतिथियों के औपचारिक स्वागत के बाद माननीय श्री अर्जुन राम मेघवाल ने कहा कि वाप्कोस का यह छोटा-सा कदम नदियों को साफ करने में मील का पत्थर साबित होगा। श्री यू.पी.सिंह ने

नदियों/घाटों की पवित्रता और महत्वता के बारे में बताया। इस नदी सफाई कार्यक्रम में सीएमडी, वाप्कोस के साथ-साथ अन्य उच्चाधिकारियों व कर्मचारियों द्वारा छठ घाट की अच्छी तरह से सफाई की गई।

माननीय राज्यमंत्री, संसदीय मामले एवं ज. सं., न. वि. और गं. सं., श्री अर्जुन राम मेघवाल, सचिव, ज. सं., न. वि. और गं. सं., श्री यू.पी.सिंह, सीएमडी, वाप्कोस एवं अन्य कर्मचारी छठ घाट की सफाई में श्रमदान करते हुए।

वाप्कोस अधिकारी एवं कर्मचारी छठ घाट की सफाई में श्रमदान करते हुए।

अपने धन्यवाद प्रस्ताव में श्री आर.के.अग्रवाल, वरि.महा प्रबंधक (वाणिज्य) ने बताया कि वाप्कोस जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय के सानिध्य में नदी को स्वच्छ करने के लिए जनता/जन समूह को जागरूक कर रहा है। **यदि नदी को स्वच्छ नहीं रख पाएंगे तो हम आने वाली पीढियों को स्वच्छ नदी स्वच्छ जल के अधिकार से वंचित रखेंगे** और उन्होंने इस कार्यक्रम में भाग लेने वाले सभी कार्मिकों से संकल्प करवाया कि वे नदियों की सफाई में अपना-अपना महत्वपूर्ण योगदान देंगे और उन्हें गन्दा नहीं करेंगे।

उक्त सभी कार्यक्रम वाप्कोस रन, माई ट्री व नदी सफाई वाप्कोस के भारत तथा विदेशों में स्थित सभी कार्यालयों में बड़े उत्साह व जोश के साथ आयोजित किए गए ।

50वां स्थापना दिवस समारोह: "उत्सव-उत्कर्ष और उन्नति का" – गुड़गांव कार्यालय परिसर- 26.06.2018

वाप्कोस में 26.06.2018 को गुड़गांव कार्यालय परिसर में 50वें स्थापना दिवस समारोह के आयोजन के रूप में **'उत्सव – उत्कर्ष और उन्नति का'** मनाया गया। इस अवसर पर माननीय राज्य मंत्री, संसदीय मामले और जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण श्री अर्जुन राम मेघवाल, सचिव, जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय श्री यू.पी.सिंह, डॉ0 एस.के.सिंह, स्वतंत्र निदेशक, वाप्कोस एवं मंत्रालय के उच्चाधिकारियों के साथ-साथ कई देशों के प्रतिनिधि भी उपस्थित थे। इस अवसर पर श्रीमती यू.पी.सिंह, श्रीमती रीमा सिंघल व श्रीमती एस.के.सिंह भी उपस्थित थीं।

माननीय राज्यमंत्री, संसदीय मामले एवं ज. सं., न. वि. और गं. सं., श्री अर्जुन राम मेघवाल को वाप्कोस के विशेषज्ञों के विभिन्न क्षेत्रों के बारे में बताते हुए सीएमडी, वाप्कोस एवं अन्य उच्चाधिकारी गण।

सर्वप्रथम सीएमडी वाप्कोस श्री आर.के.गुप्ता द्वारा माननीय राज्यमंत्री श्री अर्जुन राम मेघवाल, सचिव, श्री यू.पी.सिंह एवं अन्य उच्चाधिकारियों का पुष्पगुच्छ भेंट कर स्वागत किया गया। अतिथियों के आदर-सत्कार के उपरांत राज्यमंत्री श्री अर्जुन राम मेघवाल के साथ-साथ अन्य अधिकारियों द्वारा दीप प्रज्जवलित किया गया। दीप प्रज्जवल के उपरांत श्री पंकज कपूर, निदेशक (वित्त) द्वारा स्वागत भाषण दिया गया जिसमें उन्होंने कम्पनी

द्वारा प्राप्त उपलब्धियों के बारे में जानकारी दी। माननीय राज्यमंत्री श्री अर्जुन राम मेघवाल ने अपने अभिभाषण में वाप्कोस द्वारा किए गए कार्यों की दिल खोलकर प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि किसी व्यक्ति या संगठन के जीवन में 50वें वर्ष का पड़ाव बहुत ही महत्वपूर्ण होता है अभी वाप्कोस को ऐसे बहुत से 50 वर्ष देखने हैं। आगे उन्होंने Mr. Robert Frost की कविता "The woods are lovely, dark and deep, But I have promises to keep, And **miles to go before I sleep**, And **miles to go before I sleep**" द्वारा वाप्कोस को निरंतर आगे बढ़ाने की प्रेरणा देते हुए 50वें स्थापना दिवस की बधाई दी।

माननीय राज्यमंत्री, संसदीय मामले एवं ज. सं., न. वि. और गं. सं., श्री अर्जुन राम मेघवाल द्वारा दीप प्रज्जवलन ।

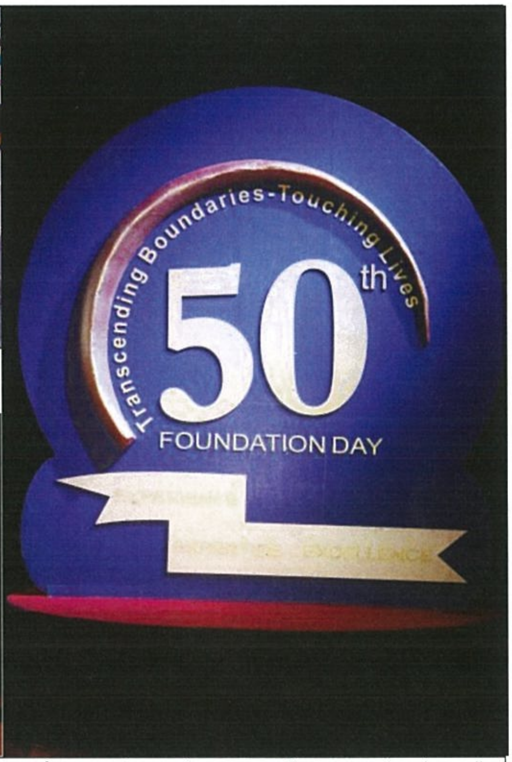

माननीय राज्यमंत्री, सं. मा. एवं ज. सं., न. वि. और गं. सं., श्री अर्जुन राम मेघवाल के कर कमलों द्वारा वाप्कोस के 50वें स्थापना दिवस के लोगो का अनावरण किया गया। इस अवसर पर उपस्थित सचिव, ज.सं., न.वि. और गं.सं., श्री यू.पी.सिंह, अध्यक्ष, केन्द्रीय जल आयोग, श्री एस.मसूद हसन, संयुक्त निदेशक, ज.सं., न.वि. और गं.सं., श्री संजय कुंडू, सीएमडी, वाप्कोस व निदेशक (वित्त), वाप्कोस।

अब बारी थी वाप्कोस के कार्मिकों द्वारा तैयार किए गए सांस्कृतिक कार्यक्रम की। वाप्कोस के कार्मिकों ने बड़ी लगन और उत्साह से तैयार किए गए भारत के लोक नृत्यों के साथ-साथ विभिन्न डांस कार्यक्रम प्रस्तुत किये। वाप्कोस की यात्रा 1969- से अब तक को वाप्कोस कार्मिकों ने डांस के माध्यम से पांच दशकों के फिल्मी गीतों के आधार पर प्रस्तुत किया जिसकी सभी ने सराहना की। यह सांस्कृतिक कार्यक्रम बहुत ही मनमोहक था। वाप्कोस की यात्रा सरल नहीं थी, वाप्कोस छोटे-छोटे कदम लेता हुआ आगे बढ़ा है और आज वाप्कोस ने बाहुबली का रूप धारण कर लिया है जिसका डंका देश व विदेशों में बज रहा है।

समारोह के समापन के दौरान मंच पर उपस्थित उच्चाधिकारीगण

अंत में श्री आर.के.गुप्ता, सीएमडी, वाप्कोस ने उपस्थित गणमान्य अतिथियों वाप्कोस कार्मिकों का धन्यवाद किया।

हिंदी आम बोलचाल की 'महाभाषा' है।

-जॉर्ज ग्रियर्सन

मुख्य समारोह : प्रातःकालीन सत्र

"Transcending Boundaries - Touching Lives"

प्रवासी भारतीय केन्द्र- 03.07.2018

वाप्कोस के 50वें स्थापना दिवस समारोह का मुख्य समारोह दो चरणों में सम्पन्न हुआ जिसका प्रथम चरण प्रवासी भारतीय केन्द्र में दिनांक 3 जुलाई 2018 को प्रातः आयोजित किया गया जिसमें माननीय श्री नितिन गडकरी, सड़क परिवहन, राजमार्ग व पोत परिवहन एवं जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्री, भारत सरकार, श्री अर्जुन राम मेघवाल, माननीय संसदीय मामले एवं जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण, डा0 सत्य पाल सिंह, माननीय राज्यमंत्री, मानव संसाधन विकास और जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण, श्रीमती रीमा सिंघल, वाप्कोस के पूर्व सीएमडी सहित लाइबेरिया, बुरूंडी, अफगानिस्तान, जिम्बाब्वे, भूटान आदि सहित 14 राष्ट्रों से 43 गणमान्य अतिथि उपस्थित थे। इनकी उपस्थिति वाप्कोस के लिए निःसंदेह बहुत सम्मान व गौरव की बात है।

माननीय श्री नितिन गडकरी, सड़क परिवहन, राजमार्ग व पोत परिवहन एवं जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्री, भारत सरकार दीप प्रज्जवलित करते हुए।

गणमान्य अतिथियों के स्वागत व दीप प्रज्ज्वलन के पश्चात् वाप्कोस पर एक निगमित फिल्म : "Transcending Boundaries- Touching Lives" दिखाई गई जिसमें वाप्कोस की उत्पत्ति और उसकी उपलब्धियों को बहुत ही सम्मोहक रूप से दर्शाया गया है।

फिल्म के बाद सीएमडी, वाप्कोस श्री आर.के.गुप्ता द्वारा श्री नितिन गडकरी, माननीय सड़क परिवहन, राजमार्ग व पोत परिवहन एवं जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्री, भारत सरकार को लाभांश कर सहित लाभांश चैक एवं बोनस शेयर का चैक भेंट किया गया ।

माननीय श्री नितिन गडकरी, सड़क परिवहन, रा. व पो. प. एवं ज. सं., न.वि. और गं.सं. मंत्री को माननीय राज्यमंत्री, संसदीय मामले एवं ज. सं., न. वि. और गं. सं., श्री अर्जुन राम मेघवाल, माननीय राज्यमंत्री, मा. सं. वि. और ज. सं., न. वि. और गं. सं., डा0 सत्य पाल सिंह व अन्य गणमान्य अतिथियों की उपस्थिति में सीएमडी, वाप्कोस लाभांश चैक एवं बोनस शेयर चैक भेंट करते हुए।

वाप्कोस के विभिन्न क्षेत्रों में उपलब्धियों को दर्शाने वाली चार काफी टेबल बुकस् Empowering Nations Touching Lives, Glimpses of Water resources, Developing Infrastructure, Touching Lives व Building Infrastructure Enriching Lives का विमोचन मुख्य अतिथि श्री नितिन गडकरी, माननीय सड़क परिवहन, राजमार्ग व पोत परिवहन एवं जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्री व अन्य गणमान्य अतिथियों के कर कमलों द्वारा किया गया ।

मुख्य अतिथि श्री नितिन गडकरी, माननीय सड़क परिवहन, राजमार्ग व पोत परिवहन एवं जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्री व अन्य गणमान्य अतिथियों के कर कमलों द्वारा "काफी टेबल बुकस्" का विमोचन

पुस्तक विमोचन के बाद विदेशी सरकारों के लगभग 25 प्रतिनिधियों द्वारा श्री नितिन गडकरी, माननीय सड़क परिवहन, राजमार्ग व पोत परिवहन एवं जल संसाधन,

नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्री, भारत सरकार को प्रशंसा पत्र भेंट किए गए ।

अफगानिस्तान सरकार का प्रतिनिधि मण्डल माननीय श्री नितिन गडकरी, स. प., रा. व पो. प. एवं ज. सं., न.वि. और गं.सं. मंत्री को अफगानिस्तान का विशेष परिधान पहना कर सम्मानित करते हुए।

डी.आर.कांगो सरकार की प्रतिनिधि माननीय श्री नितिन गडकरी, स. प., रा. व पो. प. एवं ज. सं., न.वि. और गं.सं. मंत्री को प्रशंसा पत्र भेंट करते हुए।

श्री नितिन गडकरी, माननीय सड़क परिवहन, राजमार्ग व पोत परिवहन एवं जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्री, भारत सरकार ने अपने अभिभाषण में वाप्कोस द्वारा किए जा रहे कार्यों की भरपूर प्रशंसा की व 50 वें स्थापना दिवस की हार्दिक बधाई दी। उन्होंने यह भी कहा कि आज जो उन्हें विभिन्न देशों से प्रशंसा पत्र मिले हैं उनके हकदार वाप्कोस के सभी कार्मिक हैं, जिन्होंने कठिन से कठिन परिस्थितियों में चाहे वे बहुत सर्द मौसम हो, उग्रवादियों या घातक इबोला वायरस का खतरा हो, में भी कार्य को पूरा किया है। माननीय गडकरी जी ने कहा कि वाप्कोस के सीएमडी, श्री आर.के.गुप्ता ने गत

9 वर्षों से अथक परिश्रम, दूरदर्शिता और लक्ष्य के साथ कंपनी की टीम को आगे बढ़ाया है। मैं 50वें स्थापना दिवस पर वाप्कोस परिवार को विभिन्न कठिन परिस्थितियों में कार्य सम्पन्न करने पर 'शबाशी' देता हूं।

मुख्य अतिथि श्री नितिन गडकरी, माननीय सड़क परिवहन, राजमार्ग व पोत परिवहन एवं जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्री सभा को सम्बोधित करते हुए।

डा0 सत्य पाल सिंह, माननीय राज्यमंत्री, मानव संसाधन विकास और जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण ने किसी भी निजी क्षेत्र की फर्म की भांति दक्षतापूर्वक प्रचालन करने के लिए वाप्कोस प्रबंधन टीम को बधाई दी और कहा कि कंपनी का भविष्य उज्ज्वल है, अगले 25-50 वर्षों में हम फिर से भारत और विश्व भर में विकास की भूमिका और इसकी वाणिज्यिक व निगमित उपलब्धियों के लिए वाप्कोस की सराहना करेंगे।

श्री अर्जुन राम मेघवाल, माननीय संसदीय मामले एवं जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण राज्य मंत्री ने कहा कि जल संसाधन राज्य मंत्री बनने से पहले एक बार जब वह अफ्रीका गए थे तब उन्होंने वहां वाप्कोस का नाम सुना था। विदेशी धरती पर जब कोई कहे कि भारत की कम्पनी वाप्कोस बहुत अच्छा कार्य कर रही है तो यह सुन कर उनका सीना गर्व से भर गया। आगे उन्होंने वाप्कोस के 50वें स्थापना दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं दी। माननीय मंत्री व राज्य मंत्रियों द्वारा वाप्कोस के 50वें स्थापना दिवस पर आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों के आयोजन के लिए सीएमडी, वाप्कोस श्री आर.के.गुप्ता की सराहना की और कहा कि उनके कुशल नेतृत्व में वाप्कोस का भविष्य उज्ज्वल है और विश्व भर में वाप्कोस का नाम ओर रोशन होगा।

समारोह के अंत में श्री पंकज कपूर, निदेशक (वित्त) ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया ।

मुख्य समारोह : सांय कालीन सत्र-

“Transcending Boundaries - Touching Lives”

सिरी फोर्ट आडिटोरियम - 03.07.2018

वाप्कोस के 50वें स्थापना दिवस समारोह का मुख्य समारोह सांय कालीन सत्र सिरी फोर्ट आडिटोरियम में दिनांक 3 जुलाई 2018 को आयोजित किया गया जिसमें श्री नितिन गडकरी, माननीय सड़क परिवहन, राजमार्ग व पोत परिवहन एवं जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्री, भारत सरकार, डा0 सत्य पाल सिंह, माननीय राज्यमंत्री मानव संसाधन विकास और जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण, श्रीमती सत्यपाल सिंह, श्रीमती यू.पी.सिंह, श्रीमती रीमा सिंघल, वाप्कोस के पूर्व सीएमडी सहित देश विदेशों के गणमान्य अतिथि उपस्थित थे।

गणमान्य अतिथियों के स्वागत के पश्चात् स्वागत भाषण में श्री आर.के.गुप्ता, सीएमडी, वाप्कोस ने श्री नितिन गडकरी, माननीय सड़क परिवहन, राजमार्ग व पोत परिवहन एवं जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्री, भारत सरकार, डा0 सत्य पाल सिंह, माननीय राज्यमंत्री, मानव संसाधन विकास और जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण का उनके द्वारा दिए जा रहे मार्ग दर्शन के लिए धन्यवाद दिया। उन्होंने समारोह में विभिन्न देशों से उपस्थित प्रतिनिधियों व राजदूतों का भी धन्यवाद किया और विश्वास दिलाया कि जो विश्वास वह वाप्कोस में दिखाते हैं, उसे हमेशा कायम रखा जाएगा। उन्होंने भारत सरकार व राज्य सरकारों के विभिन्न मंत्रालयों से उपस्थित अधिकारियों व वाप्कोस कार्मिकों एवं उनके परिवार के सदस्यों का भी स्वागत किया।

मुख्य अतिथि श्री नितिन गडकरी, माननीय सड़क परिवहन, राजमार्ग व पोत परिवहन एवं जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्री का पुष्पगुच्छ से स्वागत करते हुए सीएमडी, वाप्कोस

वाप्कोस के 50 वर्ष पूरे होने के अवसर पर निम्न दो पुस्तकों का विमोचन मुख्य अतिथि के करकमलों से किया गया :

1. **WAPCOS Transcending Boundaries - Touching Lives**
2. **WAPTECH बढ़ते कदम प्रगति की ओर' 50th year Commemorative Edition**

"WAPCOS Transcending Boundaries - Touching Lives" पुस्तक का विमोचन करते हुए माननीय श्री नितिन गडकरी, सड़क परिवहन, रा. व पो. प., मा.सं.वि. और ज. सं., न.वि. और गं.सं. मंत्री, डा० सत्य पाल सिंह, सुश्री नाहिदा फरीद, संसद सदस्या, अफगानिस्तान एवं सीएमडी, वाप्कोस

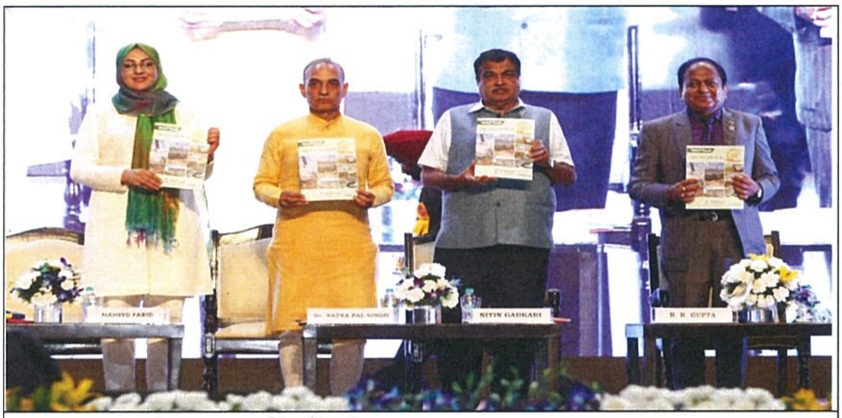

"WAPTECH बढ़ते कदम प्रगति की ओर' 50th year Commemorative Edition" पुस्तक का विमोचन करते हुए माननीय श्री नितिन गडकरी, सड़क परिवहन, रा. व पो. प., मा.सं.वि. और ज. सं., न.वि. और गं.सं. मंत्री, डा० सत्य पाल सिंह, सुश्री नाहिदा फरीद, संसद सदस्या, अफगानिस्तान एवं सीएमडी, वाप्कोस

अफगानिस्तान से इस समारोह में विशेष रूप से उपस्थित सुश्री नाहिदा फरीद (Ms. Nahida Farid), संसद सदस्या, अफगानिस्तान ने इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि वाप्कोस का काम Touching lives नहीं Touching Hearts है। अफगानिस्तान की सूखी धरती पर वाप्कोस ने आशा के मोती बिखेरे हैं। भारत-अफगान मैत्री बांध (सलमा बांध) बन जाने से हजारों हेक्टेयर भूमि पर कृषि हो रही है। लाखों

घरों में बिजली आ गई है और यह सब वाप्कोस के कारण ही सम्भव हो पाया है। उन्होंने कहा कि अफगानिस्तान की जनता चाहती है कि उनके सभी प्रोजेक्ट वाप्कोस ही करें। उन्होंने माननीय मंत्री श्री नितिन गडकरी एवं सीएमडी, वाप्कोस श्री आर.के.गुप्ता का तहेदिल से धन्यवाद किया।

श्री नितिन गडकरी, माननीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग, पोत परिवहन और जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्री, भारत सरकार ने अपने अभिभाषण में वाप्कोस को भविष्य के लिए शुभकामनाएं दी और कहा की बहुत सारे विदेशी प्रतिनिधियों, गणमान्य व्यक्तियों, राजनयिकों और अधिकारियों की उपस्थिति, वाप्कोस की क्षमताओं और आत्मविश्वास को सिद्ध करती है।

डा0 सत्य पाल सिंह, माननीय राज्यमंत्री, मानव संसाधन विकास और जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण ने भी वाप्कोस के 50वें स्थापना दिवस की शुभकामनाएं दी। तत्पश्चात् सांस्कृतिक कार्यक्रम का आरम्भ गणेश वंदना से हुआ। वंदना के बाद वाप्कोस कार्मिकों द्वारा वाप्कोस यात्रा पर स्वयं तैयार किया गया एक गीत गाया जिसकी सभी ने प्रशंसा की। पानी व अग्नि अर्थात् जल व विद्युत जोकि वाप्कोस के कार्य क्षेत्र हैं के ऊपर बहुत ही रोचक व मोहक नृत्य प्रस्तुत किया गया।

अंत में श्री अनुपम मिश्रा, कार्यकारी निदेशक (परियोजना व मानव संसाधन विकास) के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ वाप्कोस के 50वें स्थापना दिवस समारोह का समापन हुआ।

सभी कार्यक्रम अपने आप में बहुत ही अनूठे थे जिसके लिए वाप्कोस कार्मिकों ने भी हृदय से वाप्कोस प्रबंधन का धन्यवाद किया।

****

वाप्कोस के 50वें स्थापना दिवस के अवसर पर विभिन्न फील्ड कार्यालयों में मनाए गए कार्यक्रमों की झलकियां

अहमदाबाद कार्यालय

वाप्कोस रन

माई ट्री

हमारी नदी हमारा भविष्य

भुवनेश्वर कार्यालय

वाप्कोस रन

माई ट्री

हमारी नदी हमारा भविष्य

गांधीनगर कार्यालय

वाप्कोस रन

माई ट्री

हमारी नदी हमारा भविष्य

हैदराबाद कार्यालय

वाप्कोस रन

माई ट्री

हमारी नदी हमारा भविष्य

वाप्कोस के 50वें स्थापना दिवस के अवसर पर विभिन्न फील्ड कार्यालयों में मनाए गए कार्यक्रमों की झलकियां

जयपुर कार्यालय

वाप्कोस रन

माई ट्री

हमारी नदी हमारा भविष्य

चैन्नई कार्यालय

वाप्कोस रन

माई ट्री

हमारी नदी हमारा भविष्य

पूणे कार्यालय

वाप्कोस रन

माई ट्री

हमारी नदी हमारा भविष्य

पटना कार्यालय

वाप्कोस रन

माई ट्री

हमारी नदी हमारा भविष्य

वाप्कोस के 50वें स्थापना दिवस के अवसर पर विभिन्न फील्ड कार्यालयों में मनाए गए कार्यक्रमों की झलकियां

चण्डीगढ़ व पंचकुला कार्यालय

वाप्कोस रन

माई ट्री

हमारी नदी हमारा भविष्य

कोलकाता कार्यालय

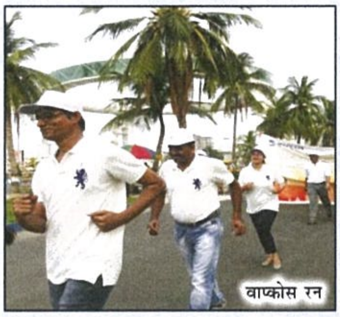
वाप्कोस रन

माई ट्री

हमारी नदी हमारा भविष्य

हल्दिया कार्यालय

वाप्कोस रन

माई ट्री

हमारी नदी हमारा भविष्य

भोपाल कार्यालय

माई ट्री

हमारी नदी हमारा भविष्य

हमारी नदी हमारा भविष्य

वाप्कोस के 50वें स्थापना दिवस के अवसर पर विभिन्न फील्ड कार्यालयों में मनाए गए कार्यक्रमों की झलकियां

गोवाहाटी कार्यालय

वाप्कोस रन

माई ट्री

हमारी नदी हमारा भविष्य

कोचिन कार्यालय

वाप्कोस रन

माई ट्री

हमारी नदी हमारा भविष्य

लखनऊ कार्यालय

माई ट्री

हमारी नदी हमारा भविष्य

सोलन कार्यालय

हमारी नदी हमारा भविष्य

कर्नाटका, जोग फाल्स कार्यालय

वाप्कोस रन

हमारी नदी हमारा भविष्य

बंगलूरू कार्यालय

माई ट्री

वाप्कोस के 50वें स्थापना दिवस के अवसर पर विदेशों में स्थित वाप्कोस कार्यालय में मनाए गए कार्यक्रमों की झलकियां

मंगोलिया कार्यालय

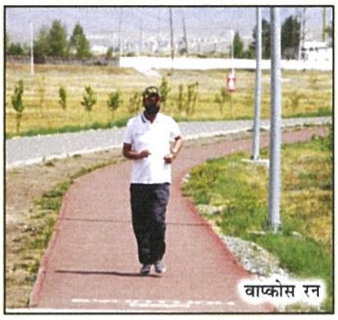
वाप्कोस रन

माई ट्री

हमारी नदी हमारा भविष्य

नेपाल कार्यालय

वाप्कोस रन

माई ट्री

हमारी नदी हमारा भविष्य

युगाण्डा कार्यालय

वाप्कोस रन

माई ट्री

हमारी नदी हमारा भविष्य

भूटान कार्यालय

वाप्कोस रन

माई ट्री

हमारी नदी हमारा भविष्य

वाप्कोस के 50वें स्थापना दिवस के अवसर पर विदेशों में स्थित वाप्कोस कार्यालय में मनाए गए कार्यक्रमों की झलकियां

स्वाजीलैंड कार्यालय

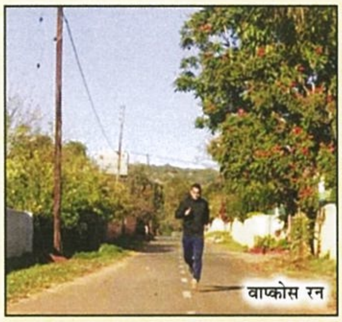
वाप्कोस रन

माई ट्री

हमारी नदी हमारा भविष्य

कम्बोडिया कार्यालय

वाप्कोस रन

माई ट्री

हमारी नदी हमारा भविष्य

टोंगो कार्यालय

वाप्कोस रन

माई ट्री

हमारी नदी हमारा भविष्य

जिम्बाब्वे कार्यालय

माई ट्री

हमारी नदी हमारा भविष्य

मोजाम्बिक कार्यालय

माई ट्री

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 21 जून को मनाया जाता है। प्रथम बार यह दिवस 21 जून 2015 को मनाया गया था जिसकी पहल भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 27 सितम्बर 2014 को संयुक्त राष्ट्र महासभा में अपने भाषण से की थी जिसमें उन्होंने कहा: "योग भारत की प्राचीन परंपरा का एक अमूल्य उपहार है। यह दिमाग और शरीर की एकता का प्रतीक है, मनुष्य और प्रकृति के बीच सामंजस्य है। यह विचार, संयम और पूर्ति प्रदान करता है। हमारी बदलती जीवन-शैली में यह चेतना बनकर हमें जलवायु परिवर्तन से निपटने में हमारी मदद करता है। आईये इस अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस को अंगीकृत करने की दिशा में कार्य करें।''

21 जून, 2018 को पूरे विश्व में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया। यह चौथा अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस था। वाप्कोस के गुड़गांव कार्यालय में भी 21 जून, 2018 को योग दिवस का आयोजन किया गया जिसमें योग टीचर के मार्गदर्शन में वाप्कोस के कार्मिकों ने बड़ी लगन व उत्साह से विभिन्न योग किये और योग अभ्यास का भरपूर लाभ उठाया। वाप्कोस के सभी फील्ड/विदेश स्थित कार्यालयों में योग कार्यक्रम आयोजित किये गए।

******

पुस्तकालय से

वाप्कोस विश्वेश्वरैया पुस्तकालय में अप्रैल, 2018 से जून, 2018 के दौरान कार्यालय के प्रयोगार्थ हिन्दी की निम्नलिखित पुस्तकें खरीदी गई हैं।

क्रम संख्या	पुस्तक का नाम	लेखक का नाम
1252	चर्चित एवं लोकप्रिय कहानियाँ, ''चन्द्रधर शर्मा गुलेरी''	चन्द्रधर शर्मा गुलेरी
1253	कश्मीर की बेटी (उपन्यास)	शत्रुध्न प्रसाद
1254	जातिगत समस्या तथा परिवर्तन	मो. इब्राहिम
1255	कृषि तकनीकी एवं रसायन अनुप्रयोग	डॉ. सुभाष सिंह
1256	प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना	डॉ. धर्मेन्द्र सिंह
1257	कौशल विकास एवं विपणन व्यवस्था	डॉ. अखंड प्रताप सिंह
1258	कर्मयोग	स्वामी विवेकानन्द
1259	परियोजना नियोजन तथा नियंत्रण	डॉ. जी. एल. श्रीवास्तव
1260	पर्यावरण के विविध आयाम और प्लास्टिक के नुकसान	डॉ. मनोज रावत
1261	महिला सशक्तीकरण एवं सामाजिक सोच	डॉ. रोहन लाल आर्य

सभी अधिकारी एवं कर्मचारी पुस्तकालय में उपलब्ध उक्त पुस्तकों से अपना ज्ञानवर्धन कर सकते हैं।

(पुस्तकालयाध्यक्ष)

****

आपके पत्र

निगम हिन्दी पत्राचार का स्वागत करता है।

उप क्षेत्रीय कार्यालय
SUB REGIONAL OFFICE
कर्मचारी राज्य बीमा निगम
EMPLOYEES' STATE INSURANCE CORPORATION
प्लाट सं. 47 सैक्टर–34, गुरुग्राम–122001
PLOT NO. 47, SECTOR-34, GURUGRAM-122001
फोन सं. 0124–2370269, 2370333 ; फैक्स 0124–2370270
ई–मेल dir-gurgaon@esic.in

संख्याः 69ए / 49 / 12 / 8 / 2009–रा.भा. | 103 दिनांकः 13 / 07 / 2018
16.7.18

सेवा में,
अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक,
वाप्कोस लिमिटेड, 76–सी,
इन्स्टीट्यूशनल एरिया,
सैक्टर–18, गुड़गांव–122015

विषयः गृह पत्रिका 'वाप्कोस दर्पण' अंक 87–88 की प्राप्ति सूचना।

महोदय,

आपके कार्यालय की गृह पत्रिका 'वाप्कोस दर्पण' का नवीनतम अंक प्राप्त हुआ। राजभाषा हिंदी के प्रयोग की दिशा में आपका यह प्रयास वास्तव में सराहनीय है। पत्रिका में प्रकाशित सामग्री से विभागीय गतिविधियों की भी जानकारी मिलती है। पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख, रचनाएं व कविताएं पत्रिका को रोचक व उपयोगी बनाते हैं। पत्रिका में राजभाषा सम्मेलन–सह–पुरस्कार वितरण समारोह के चित्र राजभाषा के प्रति वाप्कोस लि0 में तैनात अधिकारियों एवं कर्मचारियों की तत्परता का द्योतक है।

पत्रिका के संपादक मंडल एवं रचनाकारों को हार्दिक बधाई एवं भविष्य के लिए शुभकामनाएँ।

भवदीय,
16.7.18
(रत्नेश कुमार गौतम)
निदेशक(प्रभारी)

हिन्दी के प्रयोग के लिए वर्ष 2018-19 के वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्य

क्र. सं.	कार्य विवरण	'क' क्षेत्र		'ख' क्षेत्र		'ग' क्षेत्र	
1.	हिन्दी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित)	1. क क्षेत्र से क क्षेत्र को 2. क क्षेत्र से ख क्षेत्र को 3. क क्षेत्र से ग क्षेत्र को 4. क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	100% 100% 65% 100%	1. ख क्षेत्र से क क्षेत्र को 2. ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को 3. ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को 4. ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	90% 90% 55% 90%	1. ग क्षेत्र से क क्षेत्र को 2. ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को 3. ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को 4. ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	55% 55% 55% 55%
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना		100%		100%		100%
3.	हिंदी में टिप्पण		75%		50%		30%
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम		70%		60%		30%
5.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती		100%		100%		100%
6.	हिंदी में डिक्टेशन/कीबोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा		65%		55%		30%
7.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)		100%		100%		100%
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना		100%		100%		100%
9.	जनल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजीटल वस्तुओं अर्थात् हिंदी ई-पुस्तक, सीडी/डीवीडी, पेन ड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय		50%		50%		50%
10.	कम्प्यूटर सहित सभी प्रकार के इलैक्ट्रानिक उपकरणों का द्विभाषी रूप में खरीद		100%		100%		100%
11.	वेबसाइट द्विभाषी हो		100%		100%		100%
12.	नागरिक चाटर तथा जन सूचना बोर्डों आदि का प्रदर्शन द्विभाषी हो		100%		100%		100%
13.	(i) मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारी (उ.स./निदे./सं.स.) द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)		25% (न्यूनतम)		25% (न्यूनतम)		25% (न्यूनतम)
	(ii) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण		25% (न्यूनतम)		25% (न्यूनतम)		25% (न्यूनतम)
	(iii) विदेश में स्थित केन्द्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालय/उपकर्णों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण	वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण					
14.	राजभाषा संबंधी बैठक क) हिंदी सलाहकार समिति ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति	वर्ष में 02 बैठक वर्ष में 02 बैठक (प्रति छमाही एक बैठक) वर्ष में 04 बैठक (प्रति तिमाही एक बैठक)					
15.	कोड, मैनुअल, फाम, प्रक्रिया साहित्य का हिंदी अनुवाद	100%					

"क" क्षेत्र : बिहार, छत्तीसगढ़, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, झारखंड, मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड राज्य और अंडमान व निकोबार द्वीपसमूह राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली, संघ राज्य।

"ख" क्षेत्र : गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब राज्य तथा चंडीगढ़ दमन और द्वीप तथा दादर एवं नगर हवेली संघ राज्य क्षेत्र।

"ग" क्षेत्र : "क" और "ख" क्षेत्रों में शामिल नहीं किए गए अन्य सभी राज्य तथा संघ राज्य क्षेत्र।

*****

हिन्दी में काम करना सरल है, शुरू तो कीजिए ।

जावेद अख़्तर

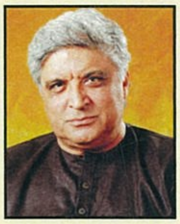

जावेद अख़्तर का नाम देश का बहुत ही जाना-पहचाना नाम है। जावेद अख़्तर शायर, फिल्मों के गीतकार और पटकथा लेखक तो हैं ही, सामाजिक कार्यकर्त्ता के रूप में भी एक प्रसिद्ध हस्ती हैं। इनका जन्म 17 जनवरी 1945 को ग्वालियर में हुआ था। वह एक ऐसे परिवार के सदस्य हैं जिसके ज़िक्र के बिना उर्दु साहित्य का इतिहास अधुरा रह जाएगा। शायरी तो पीढ़ियों से उनके खून में दौड़ रही हैं। पिता जान निसार अख़्तर प्रसिद्ध प्रगतिशील कवि और माता सफिया अख़्तर मशहूर उर्दु लेखिका तथा शिक्षिका थीं।

जीना मुशकिल है........

जीना मुशकिल है के आसान जरा देख तो लो,
लोग लगते हैं परेशान जरा देख तो लो

ये नया शहर तो है खूब बसाया तूने
क्यों पुराना हुआ वीरान जरा देख तो लो

तुम यह कहते हो कि मैं गैर हूं फिर भी शायद
निकल आए कोई पहचान जरा देख तो लो

ये तारिफ की तमन्ना ये सिले की परवाह
कहां लाई है अरमान जरा देख तो लो

वाप्कोस लिमिटेड
WAPCOS LIMITED
(भारत सरकार का उपक्रम)
जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय

पंजीकृत कार्यालय : 'कैलाश', 5वां तल, 26 कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली–110001
दूरभाष : 011–23313131–3, फैक्स : 011–23313134
निगमित कार्यालय : 76–सी, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, सेक्टर–18, गुड़गांव–122 015 (हरियाणा)
दूरभाष : 0124–2340548 फैक्स : 0124–2397392
ई–मेल : hindi@wapcos.co.in वेबसाईट : www.wapcos.co.in